National Education Policy- 2020

Common Minimum Syllabus for Uttarakhand State

Universities and Colleges

Four Year Undergraduate Programme-

FYUP/Honours Programme/Master in Arts

PROPOSED STRUCTURE FOR FYUP/MASTER'S

SANSKRIT SYLLABUS

W.e.f. 2025-26

DEPARTMENT OF SANSKRIT

| UG Fourth Year ( B.A. Honours) & PG Diploma in (Core Subject) Sanskrit | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| IV | VII | **DSC / Credit 4** | **DSE / Credit 4** | **DSE / Credit 4** | **DSE / Credit 4** | **Dissertation /6 Credit** | | | |
| | | वैदिकसाहित्य | संस्कृत–रूपक | सांख्य एवं न्यायदर्शन | व्याकरण, पालि एव प्राकृत **अथवा** संस्कृत शोधप्रविधि | Dissertation on Major OR Dissertation on Minor OR Academic Project/Entrepreneurship | | | |
| | | | OR | | | संस्कृतनाट्य एवं चलचित्र **अथवा** लोकसंस्कृति में संस्कृत का प्रभाव **अथवा** संस्कृतसाहित्य में आचार मीमांसा | | | |
| | | | **DSE / Credit 4** | **DSE / Credit 4** | **GE / Credit 4** | | | | |
| | | | संस्कृत–रूपक | सांख्य एवं न्यायदर्शन | अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य एवंसाहित्यकार | | | | |
| | | | OR | | | | | | |
| | | | **DSE / Credit 4** | **GE / Credit 4** | **GE / Credit 4** | | | | |
| | | | संस्कृत–रूपक | अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य एवंसाहित्यकार | आर्षकाव्य–रामायण | | | | |
| | VIII | **DSC / Credit 4** | **DSE / Credit 4** | **DSE / Credit 4** | **DSE / Credit 4** | **Dissertation /6 Credit** | | | |
| | | काव्य एवं भारतीयसंस्कृति | वेदाङ्ग (निरुक्त,ऋक्प्रातिशाख्य एवं पाणिनीय शिक्षा) | वाक्यपदीय एवं भाषाविज्ञान | मीमांसा एववेदान्त | Dissertation on Major OR Dissertation on Minor OR Academic Project/Entrepreneur | | | |

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | ship | | | |
| | | | OR | | | अथववेद एवं आयुर्वेद चिकित्सा **अथवा** संस्कृतसाहित्य में वर्णित समाज **अथवा** भारतीय शिक्षा व्यवस्था : प्रासंगिकता | | | |
| | | | **DSE / Credit 4** | **DSE / Credit 4** | **GE / Credit 4** | | | | |
| | | | वेदाङ्ग (निरुक्त,ऋक्प्रातिशाख्य एवं पाणिनीय शिक्षा) | वाक्यपदीय एवं भाषाविज्ञान | उत्तराखण्ड के संस्कृतसाहित्यकार | | | | |
| | | | OR | | | | | | |
| | | | **DSE / Credit 4** | **GE / Credit 4** | **GE / Credit 4** | | | | |
| | | | वेदाङ्ग (निरुक्त,ऋक्प्रातिशाख्य एवं पाणिनीय शिक्षा) | उत्तराखण्ड के संस्कृतसाहित्यकार | आर्षकाव्य–महाभारत | | | | |

| **PG Diploma/ Honours in the Core Subject-SANSKRIT** | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| Fourth Year | VII | DSC 7 | वैदिकसाहित्य | Theory | 4 |
| | Group-I | DSE 5 | संस्कृत–रूपक | Theory | 4 |
| | | DSE 6 | सांख्य एवं न्यायदर्शन | Theory | 4 |
| | | DSE 7 | व्याकरण, पालि एवं प्राकृत **अथवा**संस्कृत शोधप्रविधि | Theory | 4 |
| | Group-II | DSE 5 | संस्कृत–रूपक | Theory | 4 |
| | | DSE 6 | सांख्य एवं न्यायदर्शन | Theory | 4 |
| | | GE 7 | अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य एवंसाहित्यकार | Theory | 4 |
| | Group-III | DSE 5 | संस्कृत–रूपक | Theory | 4 |
| | | GE 7 | अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य एवंसाहित्यकार | Theory | 4 |
| | | GE 8 | आर्षकाव्य–रामायण | Theory | 4 |
| | | Dissertation | Dissertation on Major- संस्कृतनाट्य एवं भारतीय चलचित्र | Theory | 6 |
| | | | **अथवा** | | |
| | | | Dissertation on Minor- लोकसंस्कृति में संस्कृत का प्रभाव | Theory | |
| | | | **अथवा** | | |
| | | | Academic Project/ Entrepreneurship- संस्कृतसाहित्य में आचार मीमांसा | Theory | |
| | VIII | DSC 8 | काव्य एवं भारतीयसंस्कृति | Theory | 4 |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | Group I | DSE 8 | वेदाङ्ग (निरुक्त,ऋक्प्रातिशाख्य एवं पाणिनीय शिक्षा) | Theory | 4 |
| | | DSE 9 | वाक्यपदीय एवं भाषाविज्ञान | Theory | 4 |
| | | DSE 10 | मीमांसा एववेदान्त | | 4 |
| | Group II | DSE 8 | वेदाङ्ग (निरुक्त,ऋक्प्रातिशाख्य एवं पाणिनीय शिक्षा) | Theory | 4 |
| | | DSE 9 | वाक्यपदीय एवं भाषाविज्ञान | Theory | 4 |
| | | GE 9 | उत्तराखण्ड़ के संस्कृतसाहित्यकार | Theory | 4 |
| | Group III | DSE 8 | वेदाङ्ग (निरुक्त,ऋक्प्रातिशाख्य एवं पाणिनीय शिक्षा) | Theory | 4 |
| | | GE 9 | उत्तराखण्ड़ के संस्कृतसाहित्यकार | Theory | 4 |
| | | GE 10 | आर्षकाव्य–महाभारत | Theory | 4 |
| | | Dissertation | Dissertation on Major- अथर्ववेद एवं आयुर्वेद चिकित्सा | Theory | 6 |
| | | | **अथवा** | | |
| | | | Dissertation on Minor- संस्कृतसाहित्य में वर्णित समाज | Theory | |
| | | | **अथवा** | | |
| | | | Academic Project/ Entrepreneurship- भारतीय शिक्षा व्यवस्था : प्रासंगिकता | Theory | |

## COURSE INTRODUCTION

| Programme outcomes (POs) | |
|---|---|
| **PO1** | साहित्य मानव संवेदना की अभिव्यक्ति का प्रमुख स्त्रोत रहा है। कलाओं में यह सम्पूर्ण कला है। साहित्य– समाज का दर्पण है। स्नातक उपाधि में इस विषय के चयन से विद्यार्थी वर्ग साहित्य के अध्ययन से तत्कालीन समाज एवं संस्कृति से अवगत होंगें। |
| **PO2** | सहज एवं स्वाभाविक रूप से भाषा–कौशल प्राप्त कर उनमें प्रभावशाली अभिव्यक्ति की क्षमता उत्पन्न होगी। |
| **PO3** | आत्मविश्वास से युक्त एवं नेतृत्व क्षमता प्राप्त होगी। |
| **PO4** | मूल्यपरक व्यक्तित्व से युक्त होकर भारतीयता के बोध के साथ वैश्विक नागरिक के रूप में भावी चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होंगे। |
| **PO5** | विद्यार्थी संघ लोक सेवा आयोग एवं प्रादेशिक लोक सेवा आयोगों के परीक्षा पाठ्यक्रम में सम्मिलित संस्कृतसाहित्य की आधार एवं अनिवार्य शिक्षा प्राप्त कर सकेगें। |
| **PO6** | विद्यार्थियों को लेखन, वाचन एवं अध्ययन की दृष्टि से भाषागत दक्षता प्राप्त हो सकेगी। |
| **PO7** | व्याकरण के अध्ययन से उच्चारण शुद्धता प्राप्त होगी जिससे ग्रन्थों के पठन–पाठन में दक्षता मिलेगी। |
| **PO8** | भारतीय ज्ञान परम्परा के अन्तर्गत विद्यार्थी हमारे प्राचीन साहित्य एवं नैतिक मूल्यों से अवगत होंगे। |
| **PO9** | भारतीय दर्शन के अन्तर्गत आस्तिक एवं नास्तिक दर्शनों से विद्यार्थी परिचित होंगे। |
| **PO10** | संस्कृत शब्द का अर्थ है संस्कार की हुई, परिमार्जित एवं शुद्धता से परिपूर्ण अतः संस्कृत भाषा के अध्ययन से साहित्यिक भाषा का सम्यक बोध हो सकेगा। |
| **PO11** | नैतिक एवं चारित्रिक दृष्टि से मूल्यवान् व्यक्तित्वधारी होकर भारतीयता के बोध के साथ वैश्विक नागरिक के रूप में भावी चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होंगे। |
| **Programme specific outcomes (PSOs)** | |
| **PSO1** | सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा के रूप में संस्कृत भाषा के प्राचीन महत्व एवं उसकी वर्तमान प्रासंगिकता को जानने–समझने योग्य होंगे। |
| **PSO2** | संस्कृतसाहित्य की विभिन्न विधाओं (गद्य, पद्य, नाटक, व्याकरण, दर्शन, कथा इत्यादि) के सुपरिचित माध्यम से अभिव्यक्ति कौशल का विकास होगा। |
| **PSO3** | धर्म–दर्शन, आचार–व्यवहार, नीतिशास्त्र एवं भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों को जानकर उत्तम चरित्रवान् एवं कुशल नागरिक बनेगें। |
| **PSO4** | समसामयिक समस्याओं के समाधान के रूप में संस्कृत साहित्य में निबद्ध सर्वाङ्गीणता के प्रति शोधपरक दृष्टि का विकास होगा। |
| **PSO5** | संस्कृतभाषा अध्ययन, सम्भाषण, से जीविकोपार्जन के योग्य हो जायेगें। |
| **PSO6** | संस्कृतसाहित्य, भारतीयसंस्कृति ,भारतीय दर्शन, संस्कृत व्याकरण आदि का बोध हो सकेगा। |
| **Course Outcomes: (COs)** | |
| **CO1** | विद्यार्थी स्नातकउपाधि पाठ्यक्रम के अन्तर्गत मुख्य विषय के रूप मे साहित्यशास्त्र, दर्शन एवं व्याकरण का आधारभूत ज्ञान प्राप्त करेगें। |
| **CO2** | पाठ्यक्रम के अन्तर्गत, उपनिषद् पुराण एवं स्तोत्रकाव्य से परिचित होगें। |
| **CO3** | स्नातक उपाधि के पाठ्यक्रम में विद्यार्थी वैदिकवाङ्मय ,एवं धर्मशास्त्र का ज्ञान प्राप्त करेंगें। |
| **CO4** | पाठ्यक्रम के अन्तर्गत भारतीय ज्ञानपरम्परा के अन्तर्गत भारतीय दर्शन, एवं नीतिकथाओं के अध्ययन से विद्यार्थी का चारित्रिक उन्नयन होगा। |

| | |
|---|---|
| **CO5** | पाठ्यक्रम के अन्तर्गत स्मृति साहित्य का अध्ययन कर उसके महत्व से परिचित होगें। |
| **CO6** | कौटिलीय अर्थशास्त्र के अध्ययन से विद्यार्थी परिचित होगें।इस प्रकार धर्म–दर्शन, आचार–व्यवहार, नीतिशास्त्र के मूलतत्त्वों को जानकर उत्तम चरित्रवान् मानव एवं कुशल नागरिक बनेंगे। प्रस्तावित विषय–संस्कृतसाहित्य की विविध विधाओं एवं वैदिकवाङ्मय पर आधारित विषय पर लघुशोधकार्य से विद्याार्थियों की शोधपरक बुद्धि का विकास होगा। सर्वेक्षण, अन्वेषण एवं मनन–चिन्तन से उनका बौद्धिकस्तर बढेगा साथ ही समसामयिक समस्या के निदान का मार्ग भी प्रशस्त होगा। |
| **CO7** | संस्कृतभाषा के अध्ययन से विद्यार्थी अन्य भाषा के स्रोत को सरलता से समझ सकते हैं एवं संस्कृतसम्भाषण से विद्याार्थियों की वाक्शक्ति का विकास होगा। |
| **CO8** | संस्कृत महाकाव्य के अध्ययन से उनमें निहित महान् चरित्रों का अध्ययन कर आत्मसात् करेंगे एवं संस्कृत महाकाव्य मे प्रयुक्त रस, छन्द, अलंकारों के माध्यम से काव्यशास्त्रीय तत्त्वों को समझने की क्षमता प्राप्त करेंगे। |
| **CO9** | विद्यार्थी श्रीमद्भगवद्गीता के अन्तर्गत प्रतिपाद्य विषय के अध्ययन से कर्मसिद्धान्त एवं अध्यात्मज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। |
| **CO10** | उपनिषद्, पुराण एवं स्तोत्रकाव्य के अध्ययन से विद्यार्थी सांस्कृतिक एवं सामाजिक चेतना से परिचित होंगे। |

**……..0……..……**

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| Discipline Specific Course | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| B.A.Honours / PG Diploma in the Core Subject-SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| Subject:- SANSKRIT | | Year: IV | Semester: VII Paper-DSC I |
| Course Code: DSC 07 | Course Title: **वैदिकसाहित्य** | | |

**Course Outcomes:** अधिगम उपलब्धि

1. वेद, वैदिकसंहिता, ब्राह्मणग्रन्थ, आरण्यकग्रन्थ, उपनिषद्,वेदाङ्ग एवं वैदिकसाहित्य की पृष्ठभूमि में रचित ग्रन्थों से सुपरिचित होंगे।
2. वैदिक सूक्तों के महत्त्व से सुपरिचित होंगे।
3. वैदिक साहित्य के माध्यम से नैतिक एवं राष्ट्रिय भावना से अभिभूत होंगे।
4. वैदिक वाङ्गमय एवं संस्कृति का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

| **Unit** | **Topic- वेद से निम्नलिखित सूक्त–** |
|---|---|
| **Unit I** | इन्द्र–2/12, सूर्य– 1/115, अग्नि– 1/143 |
| **Unit II** | उषस्– 3/61, पुरुष सूक्त– 10/90 |
| **Unit III** | नासदीय– 10/129, हिरण्यगर्भ– 10/121 विश्वामित्र–नदी संवाद–3/33 |
| **Unit IV** | यजुर्वेद– योगक्षेम–22/22, अथर्ववेद–राष्ट्राभिवर्धन–1/29 |
| **Unit V** | वैदिक साहित्य का इतिहास |

**Suggested Reading:**


1. द न्यू वैदिक सलेक्शनभाग– 01 तथा भाग–02– सम्पादक– ब्रजबिहारी चौबे (तैलंग एवं चौबे)।
2. ऋक्सूक्त संग्रह–डॉ0 हरिदत्त शास्त्री एवं डॉ0 कृष्णकुमार–प्रकाशन– साहित्य भण्डार सुभाष बाजार मेरठ– 250002।
3- Hymns of the Rigvdea- Peterson .
4. वैदिकसाहित्य का इतिहास–डॉ0 कृष्णकुमार ,साहित्य भण्डार मेरठ।
5. वैदिकसाहित्य का इतिहास–गजानन शास्त्री मुसलगाँवकर एवं पं0 राजेश्वर (राजू) केशवशास्त्री मुसलगाँवकर प्रकाशन–चौखम्बा संस्कृत, वाराणसी
6. वैदिकसाहित्य का इतिहास–डॉ0कर्णसिंह,साहित्य भण्डार मेरठ।
7. वैदिकसाहित्य का इतिहास–वाचस्पति गैरोला, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान,दिल्ली।
8. ऋक् सूक्त मंजूषा–प्रो0 महावीर अग्रवाल, सत्यं प्रकाशन, नई दिल्ली।

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

### Group- I

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| Discipline Specific Electives | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| B.A.Honours / PG Diploma in the Core Subject-SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| Subject:- SANSKRIT | | Year: IV | Semester:VII Paper-DSE II |
| Course Code: DSE 05 | Course Title:**संस्कृत–रूपक** | | |

| **Course Outcomes:** अधिगम उपलब्धि<br>1. सस्कृत रूपक साहित्य का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर रूपकों के भेदों से सुपरिचित हो सकेंगे।<br>2. रूपक साहित्य एवं साहित्यकारों के माध्यम से उनके नैतिक एवं चारित्रिक उत्कर्ष को समझ पायेंगे।<br>3. रूपक साहित्य के ज्ञान से कल्पनाशीलता एवं रचनात्मक क्षमता का विकास होगा। | |
|---|---|
| **Unit** | **Topic** |
| **Unit I** | उत्तररामचरितम्– भवभूति– प्रथम से तृतीय अंक पर्यन्त। |
| **Unit II** | उत्तररामचरितम्– भवभूति– चतुर्थ से समाप्ति पर्यन्त। |
| **Unit III** | रत्नावली– हर्षदेवकृत– सम्पूर्ण। |
| **Unit VI** | सम्बन्धित ग्रन्थों का नाट्यशास्त्रीय अध्ययन। |
| **Unit V** | संस्कृत रूपककारकापरिचय– भास, कालिदास, हर्ष, भवभूति, शूद्रक, विशाखदत्त, भट्ट नारायण। |

**Suggested Reading:**


1. उत्तररामचरितम्–पद्मश्री डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी।
2. उत्तररामचरितम्–कृष्णकान्त शुक्ल एवं ब्रह्मानन्द शुक्ल।
3. उत्तररामचरितम् की शास्त्रीय समीक्षा–डॉ0 सत्यनारायण चौधरी।
4. भवभूति एवं उनकी नाट्यकला–डॉ0 अयोध्याप्रसाद सिंह।
5. संस्कृतकविसमीक्षा–अमर नाथ पाण्डेय, चौखम्बा ओरिएन्टल, वाराणसी।
6. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–पद्मश्री डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, संस्कृत साहित्य संस्थान, 37 कचेहरी मार्ग इलाहाबाद।
7. संस्कृत साहित्य का इतिहास–पद्मविभूषण डॉ0 बलदेव उपाध्याय, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ।
8. संस्कृत काव्यकार– डॉ0 हरिदत्त शास्त्री।
9. रत्नावली–हर्षदेवकृत–व्याख्याकार एवं सम्पादक डॉ0 शिवप्रसाद शास्त्री, मेरठ साहित्य भण्डार 1994।

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| Discipline Specific Electives | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| B.A.Honours / PG Diploma in the Core Subject-SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| Subject :- SANSKRIT | | Year: IV | Semester:VII Paper-DSE III |
| Course Code: DSE 06 | Course Title:**सांख्य एवं न्यायदर्शन** | | |

| **Course Outcomes:**अधिगम उपलब्धि<br>1. भारतीय दार्शनिक तत्त्वों का सामान्य ज्ञान प्राप्त होगा।<br>2. सांख्य दर्शन के मूलभूत सिद्धान्तों को जानकर प्रमेय पदार्थो से परिचित होंगे।<br>3. न्यायशास्त्र के प्राचीन एवं वैज्ञानिक ज्ञान से लाभान्वित होंगे।<br>4. न्यायदर्शन से प्राचीन एवं आधुनिक न्याय व्यवस्था से परिचित होंगे। | |
|---|---|
| **Unit** | **Topic** |
| **Unit I** | सांख्य एवं न्यायदर्शन परम्परा, सांख्यकारिका–ईश्वर कृष्ण कृत (01–35 वीं कारिका पर्यन्त) |
| **Unit II** | सांख्यकारिका–ईश्वर कृष्ण कृत (36–72वीं कारिका पर्यन्त) |
| **Unit III** | तर्कभाषा–प्रारम्भ से प्रत्यक्ष पर्यन्त। |
| **Unit IV** | तर्कभाषा–अनुमान से प्रामाण्यवाद पर्यनत। |
| **Unit V** | तर्कभाषा–प्रमेय निरूपण। |

**Suggested Reading:**


1. सांख्यकारिका–ढुण्ढिराज शास्त्री।
2. सांख्यकारिका–डॉ0 रमाशंकर तिवारी।
3. सांख्यकारिका–जगन्नाथ शास्त्री।
4. सांख्यकारिका–डॉ0 रामकृष्ण आचार्य।
5. तर्कभाषा–आचार्य विश्वेश्वर पाण्डे, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
6. तर्कभाषा–श्रीनिवास शास्त्री, चौखम्बा सुरभारती, वाराणसी।
7. तर्कभाषा–आचार्य बद्रीनाथ शुक्ल।
8. भारतीय दर्शन–उमेश मिश्र, लखनऊ हिन्दी समिति ग्रन्थमाला।
9. Indian Philosophy– S.Das Gupta।
10. तर्क भाषा–केशवशास्त्री मुसलगाँवकर प्रकाशन– चौखम्बा संस्कृत, वाराणसी।

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| Discipline Specific Electives | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| B.A.Honours / PG Diploma in the Core Subject-SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| Subject:- SANSKRIT | | Year: IV | Semester:VII Paper-DSE IV |
| Course Code: DSE 07 | Course Title: **व्याकरण, पालि एवं प्राकृत** | | |

**Course Outcomes:** अधिगम उपलब्धि

1. व्याकरण अध्ययन से विद्यार्थी उच्चारण कौशल में निपुण होंगे।
2. संस्कृत व्याकरण का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर उसकी वैज्ञानिकता से सुपरिचित होंगे।
3. कारक एवं समास का विशिष्ट ज्ञान एवं उनके अनुपयोग का कौशल विकसित होगा।

| Unit | Topic |
|---|---|
| **Unit I** | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी–कारक प्रकरण–कर्त्ता, कर्म एवं करण। |
| **Unit II** | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी–कारक प्रकरण–सम्प्रदान, अपादान, एवं अधिकरण। |
| **Unit III** | समास प्रकरण–लघुसिद्धान्तकौमुदी के आधार पर। |
| **Unit VI** | पालीभाषा परिचय एवं धम्मपद–दशवग्गपर्यन्त (व्याख्या–टिप्पणी)। |
| **Unit V** | प्राकृत भाषा उद्गम–विकास एवं ग्रन्थपरिचय। |

**Suggested Reading:**


1. सिद्धान्त कौमुदी–भट्टोजिदीक्षित, व्याख्याकार–श्री गोपालदत्त पाण्डेय।
2. एम0 ए0 संस्कृत व्याकरण–श्रीनिवास शास्त्री।
3. धम्मपद–सम्पादक, कन्छेदीलाल गुप्त।
4. पालि साहित्य का इतिहास–डॉ0 भरतसिंह उपाध्याय।
5. लघुसिद्धान्तकौमुदी–श्रीधरानन्द शास्त्री,चौखम्बा सुरभारती, वाराणसी।
6. तिङन्त प्रकरणम्–डॉ0 लज्जा भट्ट
7. अभिनव प्राकृत प्रकाश–नेमिचन्द्र शास्त्री
8. भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी,विश्वविद्यालय प्रकाशन,वाराणसी।

**अथवा**

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| Discipline Specific Electives | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| B.A.Honours / PG Diploma in the Core Subject-SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| Subject:- SANSKRIT | | Year: IV | Semester:VII Paper- DSE IV |
| Course Code: DSE 07 | Course Title: **संस्कृत–शोधप्रविधि** | | |

**Course Outcomes:** अधिगम उपलब्धि

1– विद्यार्थी शोधप्रविधि के अध्ययन से शोध के क्षेत्र में प्रवेश करेगें।

2– विद्यार्थी किसी भी विषय को लेकर शोधकार्य कर सकेगें।

3– शोधकार्य में किसी भी प्रविधि के माध्यम से शोधकार्य को पूर्ण करने में सफल होगें।

| **Unit** | **Topic** |
|---|---|
| **Unit I** | शोध का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप। |
| **Unit II** | शोध के प्रकार एवं शोध के मुख्यतत्त्व एवं महत्त्व। |
| **Unit III** | शोधप्रविधि की परिभाषा, प्रकार एवं महत्त्व। |
| **Unit VI** | शोधप्रविधि का निर्धारण एवं विशेषताए। |
| **Unit V** | साहित्यिक शोध अर्थ स्वरूप, तत्त्व,पद्धतियॉ एवं उद्देश्य। |

**Suggested Reading:**

1– रिसर्च मैथ्योलॉजी– डॉ0 आर0एन0 त्रिवेदी, डॉ0 डी0पी0 शुक्ला।

2– रिसर्च मैथ्योलॉजी– डॉ0 बी0 एम0 जैन।

3– शोधप्रविधि एवं पाण्डुलिपि विज्ञान– प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र।

4– अनुसन्धान का स्वरूप सम्पादिका– डॉ0 सावित्री सिन्हा, हिन्दी अनुसन्धान परिषद्, दिल्ली वि0वि0 आत्माराम एंड संस प्रकाशन।

5– अनुसन्धान की प्रक्रिया– डॉ0 सावित्री सिन्हा, डॉ0 विजयेन्द्र स्नातक, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

**अथवा**

**Group- II**

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| Discipline Specific Electives | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| B.A.Honours / PG Diploma in the Core Subject-SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| Subject:- SANSKRIT | | Year: IV | Semester: VII Paper-DSE II |
| Course Code: DSE 05 | Course Title: **संस्कृत–रूपक** | | |

**Course Outcomes:** अधिगम उपलब्धि

1. सस्कृत रूपक साहित्य का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर रूपकों के भेदों से सुपरिचित हो सकेंगे।
2. रूपक साहित्य एवं साहित्यकारों के माध्यम से उनके नैतिक एवं चारित्रिक उत्कर्ष को समझ पायेंगे।
3. रूपक साहित्य के ज्ञान से कल्पनाशीलता एवं रचनात्मक क्षमता का विकास होगा।

| **Unit** | **Topic** |
|---|---|
| **Unit I** | उत्तररामचरितम्– भवभूति– प्रथम से तृतीय अंक पर्यन्त। |
| **Unit II** | उत्तररामचरितम्– भवभूति– चतुर्थ से समाप्ति पर्यन्त। |
| **Unit III** | रत्नावली– हर्षदेवकृत– सम्पूर्ण। |
| **Unit VI** | सम्बन्धित ग्रन्थों का नाट्यशास्त्रीय अध्ययन। |
| **Unit V** | संस्कृत रूपककारका परिचय– भास, कालिदास, हर्ष, भवभूति, शूद्रक, विशाखदत्त, भट्ट नारायण। |

**Suggested Reading:**


1. उत्तररामचरितम्–पद्मश्री डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी।
2. उत्तररामचरितम्–कृष्णकान्त शुक्ल एवं ब्रह्मानन्द शुक्ल।
3. उत्तररामचरितम् की शास्त्रीय समीक्षा–डॉ0 सत्यनारायण चौधरी।
4. भवभूति एवं उनकी नाट्यकला–डॉ0 अयोध्याप्रसाद सिंह।
5. संस्कृतकविसमीक्षा–अमर नाथ पाण्डेय, चौखम्बा ओरिएन्टल, वाराणसी।
6. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास– पद्मश्री डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, संस्कृत साहित्य संस्थान, 37 कचेहरी मार्ग इलाहाबाद।
7. संस्कृत साहित्य का इतिहास– पद्मविभूषण डॉ0 बलदेव उपाध्याय, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ।
8. संस्कृत काव्यकार–डॉ0 हरिदत्त शास्त्री।
9. रत्नावली–हर्षदेवकृत–व्याख्याकार एवं सम्पादक डॉ0 शिवप्रसाद शास्त्री, मेरठ साहित्य भण्डार 1994।

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| Discipline Specific Electives | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| B.A.Honours / PG Diploma in the Core Subject-SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| subject:- SANSKRIT | | Year: IV | Semester:VII Paper-DSE III |
| Course Code: DSE 06 | Course Title: **सांख्य एवं न्यायदर्शन** | | |

**Course Outcomes:** अधिगम उपलब्धि

1. भारतीय दार्शनिक तत्त्वों का सामान्य ज्ञान प्राप्त होगा।
2. सांख्यदर्शन के मूलभूत सिद्धान्तों को जानकर प्रमेय पदार्थो से परिचित होंगे।
3. न्यायशास्त्र के प्राचीन एवं वैज्ञानिक ज्ञान से लाभान्वित होंगे।
4. न्यायदर्शन से प्राचीन एवं आधुनिक न्याय व्यवस्था से परिचित होंगे।

| **Unit** | **Topic** |
|---|---|
| **Unit I** | सांख्यकारिका–ईश्वरकृष्ण कृत (01–35 वीं कारिका पर्यन्त) |
| **Unit II** | सांख्यकारिका–ईश्वरकृष्ण कृत (36–72 वीं कारिका पर्यन्त) |
| **Unit III** | तर्कभाषा–प्रारम्भ से प्रत्यक्ष पर्यन्त। |
| **Unit IV** | तर्कभाषा–अनुमान से प्रामाण्यवाद पर्यनत। |
| **Unit V** | तर्कभाषा–प्रमेय निरूपण, सांख्य एवं न्यायदर्शन का इतिहास। |

**Suggested Reading:**


1. सांख्यकारिका–ढुण्ढिराज शास्त्री।
2. सांख्यकारिका–डॉ0 रमाशंकर तिवारी।
3. सांख्यकारिका–जगन्नाथ शास्त्री।
4. सांख्यकारिका–डॉ0 रामकृष्ण आचार्य।
5. तर्कभाषा–आचार्य विश्वेश्वर पाण्डे, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
6. तर्कभाषा–श्रीनिवास शास्त्री, चौखम्बा सुरभारती, वाराणसी।
7. तर्कभाषा–आचार्य बद्रीनाथ शुक्ल।
8. भारतीय दर्शन–उमेश मिश्र, लखनऊ हिन्दी समिति ग्रन्थमाला।
9. Indian Philosophy– S.Das Gupta ।

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| General Electives | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| B.A. Honours / PG Diploma in the Core Subject-SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| subject:- SANSKRIT | | Year: IV | Semester: VII Paper- GE IV |
| Course Code: GE 07 | Course Title:**अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य एवं साहित्यकार** | | |

**Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि**

1. अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य से सुपरिचित होंगे।
2. आधुनिक संस्कृतसाहित्यकारों से सुपरिचित होंगे।
3. अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य के विविध आयामों से परिचित होंगे।
4. अर्वाचीन पत्र–पत्रिकाओं से सुपरिचित होंगे।
5. उत्तराखण्ड के प्रमुख संस्कृत साहित्य एवं साहित्यकारों से परिचित होंगे।

| **Unit** | **Topic** |
|---|---|
| **Unit I** | अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य का इतिहास–उन्नीसवीं शताब्दी से बीसवीं शताब्दी तक। |
| **Unit II** | अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य के विविध आयाम एवं अर्वाचीन काव्यशास्त्रीय ग्रन्थों का परिचय। |
| **Unit III** | अर्वाचीन प्रमुख संस्कृतसाहित्यकार एवं उनकी रचनाएँ– पं0 अम्बिकादत्त व्यास, आचार्यविश्वेश्वर पाण्डेय, पण्डिता क्षमाराव, प्रो0 सत्यव्रत शास्त्री, डॉ0ब्रह्मानन्द शुक्ल, श्रीधर भास्कर वर्णेकर, प्रो0 हरिनारायण दीक्षित, डॉ0 मथुरा प्रसाद दीक्षित, प्रो0 हरिदत्त शर्मा, डॉ0 राधेश्याम गंगवार। |
| **Unit IV** | अर्वाचीन प्रमुख पत्र–पत्रिकाओं का परिचय– दूर्वा, सागरिका, अजस्रा, अर्वाचीनसंस्कृतम्, संस्कृतमञ्जरी, शोधभारती, सारस्वतीसुषमा, वैदिक वाग्ज्योति, वाक्, हरिप्रभा। |

**Suggested Reading:**


1. आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास–पद्मभूषणपं0 बलदेव उपाध्याय,उ0 प्र0 सं0 सं0 लखनऊ।
2. उत्तराखण्ड के संस्कृत रचनाकार प्रारम्भ से अद्यतन– प्रो0 शालिमा तबस्सुम,परिमल पब्लिकेशन, दिल्ली।
3. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास–सप्तम खण्ड–सम्पादक डॉ0 जगन्नाथ पाठक, उ0प्र0सं0सं0लखनऊ।
4. आधुनिक संस्कृत नाटक–रामजी उपाध्याय।
5. संस्कृत का अर्वाचीन समीक्षात्मक काव्यशास्त्र–प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद।
6. काव्यालंकारकारिका–प्रोफेसर रेवाप्रसाद द्विवेदी।
7. साहित्यविमर्श–प्रोफेसर रहस विहारी द्विवेदी,शिवेश प्रकाशन इलाहाबाद।
8. संस्कृतसाहित्य का अभिनव इतिहास–प्रो0 राधबल्लभ त्रिपाठी,सम्पूर्णानन्द संस्कृतविश्वविद्यालय,वाराणसी।
9. विंशतिशताब्दीसंस्कृतकाव्यामृतम्–प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद।
10. आधुनिक संस्कृत साहित्य संचयन–डॉ0 गिरीश चन्द्र पन्त– विद्यानिधि प्रकाशन दिल्ली।
11- Sanskrita Sāhitya Vaibhavam (Edited), Prof. C. Upendr Rao, Published by VIdyanidhi Prakashan Delhi, 2007.
12. Satyavrat sāhitya sāmīkshā (a critique on Satyavrat Shastrī"s writings), edited, ), Prof. C. Upendr Rao, Published by Eastern book linkers, New Delhi. 2012.
13. Vāṅgmayavallarī (Research article in Sanskrit),), Prof. C. Upendr Rao, Published by Eastern Book Linkers, Darya Gunj, Delhi, 2008.

अथवा

**Group- III**

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| Discipline Specific Electives | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| B.A. Honours / PG Diploma in the Core Subject-SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| subject:- SANSKRIT | | Year: IV | Semester:VII Paper-DSE II |
| Course Code: DSE 05 | Course Title: **संस्कृत–रूपक** | | |

**Course Outcomes:** अधिगम उपलब्धि

1. सस्कृत रूपक साहित्य का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर रूपकों के भेदों से सुपरिचित हो सकेंगे।
2. रूपक साहित्य एवं साहित्यकारों के माध्यम से उनके नैतिक एवं चारित्रिक उत्कर्ष को समझ पायेंगे।
3. रूपक साहित्य के ज्ञान से कल्पनाशीलता एवं रचनात्मक क्षमता का विकास होगा।

| **Unit** | **Topic** |
|---|---|
| **Unit I** | उत्तररामचरितम्– भवभूति– प्रथम से तृतीय अंक पर्यन्त। |
| **Unit II** | उत्तररामचरितम्– भवभूति– चतुर्थ से समाप्ति पर्यन्त। |
| **Unit III** | रत्नावली– हर्षदेवकृत– सम्पूर्ण। |
| **Unit VI** | सम्बन्धित ग्रन्थों का नाट्यशास्त्रीय अध्ययन। |
| **Unit V** | संस्कृत रूपककार का परिचय– भास, कालिदास, हर्ष, भवभूति, शूद्रक, विशाखदत्त, भट्ट नारायण। |

**Suggested Reading:**


1. उत्तररामचरितम्–पद्मश्री डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी।
2. उत्तररामचरितम्–कृष्णकान्त शुक्ल एवं ब्रह्मानन्द शुक्ल।
3. उत्तररामचरितम् की शास्त्रीय समीक्षा–डॉ0 सत्यनारायण चौधरी।
4. भवभूति एवं उनकी नाट्यकला–डॉ0 अयोध्याप्रसाद सिंह।
5. संस्कृतकविसमीक्षा–अमर नाथ पाण्डेय, चौखम्बा ओरिएन्टल, वाराणसी।
6. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–पद्मश्री डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, संस्कृत साहित्य संस्थान, 37 कचेहरी मार्ग इलाहाबाद।
7. संस्कृत साहित्य का इतिहास–पद्मविभूषण डॉ0 बलदेव उपाध्याय, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ।
8. संस्कृत काव्यकार–डॉ0 हरिदत्त शास्त्री।
9. रत्नावली–हर्षदेवकृत–व्याख्याकार एवं सम्पादक डॉ0 शिवप्रसाद शास्त्री, मेरठ साहित्य भण्डार 1994।

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| General Electives | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| B.A.Honours / PG Diploma in the Core Subject-SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| subject:- SANSKRIT | | Year: IV | Semester: VII Paper- GE III |
| Course Code: GE 07 | Course Title:**अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य का इतिहास** | | |

**Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि**

1. अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य से सुपरिचित होंगे।
2. आधुनिक संस्कृतसाहित्यकारों से सुपरिचित होंगे।
3. अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य के विविध आयामों से परिचित होंगे।
4. अर्वाचीन पत्र–पत्रिकाओं से सुपरिचित होंगे।
5. उत्तराखण्ड के प्रमुख संस्कृत साहित्य एवं साहित्यकारों से परिचित होंगे।

| **Unit** | **Topic** |
|---|---|
| **Unit I** | अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य का इतिहास–उन्नीसवीं शताब्दी से बीसवीं शताब्दी तक। |
| **Unit II** | प्रमुख आधुनिक संस्कृत महाकाव्य, आधुनिक संस्कृत साहित्य की प्रमुख नवीन विधाएँ। |
| **Unit III** | अर्वाचीन प्रमुख संस्कृतसाहित्यकार– पं0 अम्बिकादत्त व्यास, आचार्यविश्वेश्वर पाण्डेय, पण्डिता क्षमाराव, प्रो0 सत्यव्रत शास्त्री, डॉ0ब्रह्मानन्द शुक्ल, श्रीधर भास्कर वर्णेकर, प्रो0 हरिनारायण दीक्षित, मथुरा प्रसाद दीक्षित, अभिराज राजेन्द्र मिश्र, डॉ0 राधेश्याम गंगवार। |
| **Unit IV** | अर्वाचीन प्रमुख पत्र–पत्रिकाओं का परिचय– दूर्वा, सागरिका, अजस्रा, अर्वाचीनसंस्कृतम्, संस्कृतमञ्जरी, शोधभारती, सारस्वतीसुषमा, वैदिक वाग्ज्योति, वाक्, हरिप्रभा, वाङ्मयवल्लरी। |

**Suggested Reading:**


1. आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास–पद्मभूषणपं0 बलदेव उपाध्याय।
2. उत्तराखण्ड के संस्कृत रचनाकार प्रारम्भ से अद्यतन– प्रो0 शालिमा तबस्सुम,परिमल पब्लिकेशन, दिल्ली।
3. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास–सप्तम खण्ड–सम्पादक डॉ0 जगन्नाथ पाठक, उ0प्र0सं0सं0लखनऊ।
4. आधुनिक संस्कृत नाटक–रामजी उपाध्याय।
5. संस्कृत का अर्वाचीन समीक्षात्मक काव्यशास्त्र–प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद।
6. काव्यालंकारकारिका–प्रोफेसर रेवाप्रसाद द्विवेदी।
7. साहित्यविमर्श–प्रोफेसर रहस विहारी द्विवेदी।
8. संस्कृतसाहित्य का अभिनव इतिहास–प्रो0 राधबल्लभ त्रिपाठी, सागर विश्वविद्यालय,सागर।
9. विंशतिशताब्दीसंस्कृतकाव्यामृतम्–प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद।
9. Sanskrita Sāhitya Vaibhavam (Edited), Prof. C. Upendr Rao, Published by VIdyanidhi PrakashanNew Delhi, 2007.
10. Satyavrat sāhitya sāmīkshā (a critique on Satyavrat Shastri"s writings), edited, ), Prof. C. Upendr Rao, Published by Eastern book linkers, New Delhi. 2012.
11. Vāṅgmayavallarī (Research article in Sanskrit),), Prof. C. Upendr Rao, Published by Eastern Book Linkers, Darya Gunj, Delhi, 2008.
12. आधुनिक संस्कृत साहित्य संचयन–डॉ0 गिरीश चन्द्र पन्त–विद्यानिधि प्रकाशन दिल्ली।

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| General Electives | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| B.A.Honours / PG Diploma in the Core Subject-SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| subject:- SANSKRIT | | Year: IV | Semester: VII Paper- GE IV |
| Course Code: GE 08 | Course Title: **आर्षकाव्य–रामायण** | | |

**Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि**

1. रामायण का सामान्य परिचय, नैतिक शिक्षा का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. रामायण में निहित सामाजिक चेतना की शिक्षा से सुपरिचित हो सकेंगे।
3. व्यक्ति एवं समाज की भूमिका निर्धारित करने की कला व गुण से परिचित हो सकेंगे।

| Unit | Topic |
|---|---|
| **Unit I** | महर्षिवाल्मीकि एवं वाल्मीकिप्रणीतरामायण का परिचय। |
| **Unit II** | रामायण के सातोंकाण्डों का प्रतिपाद्य विषय। |
| **Unit III** | रामायण का माहात्म्य एवं प्रमुखपात्रों के चरित्र से प्राप्त शिक्षा। |
| **Unit IV** | रामायण के आदित्यहृदयस्तोत्र का अर्थ एवं महत्त्व। |

**Suggested Reading:**


1. श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणम्–सम्पादकमण्डल–जी0ए0 भट्ट, पी0एल0 वैद्य, डी0आर0 मनकण्ड आदि।
2. रामकथा उत्पत्ति और विकास–कामिलबुल्केकृता।
3. श्रीमद्वाल्मीकीय कृत रामायणम्–गीता प्रेस गोरखपुर।
4. वाल्मीकि रामायण में मूल्य चेतना–डॉ0 बृजेश, नाग प्रकाशन।
5. संस्कृत वाङ्मय में श्रीराम. प्रो0 सी0 उपेन्द्र राव– ईस्टर्न बुक लिंकर्स, नयी दिल्ली।

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| IAPC 3 | 6 | 3 | 3 | 0 | | Nil |

| PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| Subject:- SANSKRIT | | Year: IV | Semester: VII Paper- IAPC |
| Course Code: IAPC 03 | Course Title: **संस्कृतनाट्य एवं भारतीय चलचित्र** | | |

**Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि** नाट्य के सामान्य स्वरूप व प्रमुख सिद्धान्तों के अध्ययनोपरान्त नाट्यशास्त्र की शास्त्रीय समीक्षा का बोध होगा। इन सिद्धान्तों का विभिन्न भाषायी सिनेमा में अनुप्रयोग सम्बन्धी अध्ययन के द्वारा शास्त्रीय अभिनय कौशल और दक्षता का विकास होगा। इन मूल्यों के आधार पर आधुनिक फिल्में शंकराचार्य, मदर इण्डिया, गाँधी आदि की समीक्षा करने में सक्षम होंगे।

| Unit | Topic |
|---|---|
| **Unit I** | संस्कृत नाट्य–परिचय एवं महत्त्व। |
| **Unit II** | भारतीय संस्कृति में सिनेमा का परिचय एवं महत्त्व। नाट्यशास्त्र आधारित रंगमंच,संवाद,पात्र इत्यादि |
| **Unit III** | संस्कृत में उपलब्ध चलचित्रों का सामान्य परिचय। |
| **Unit IV** | संस्कृत नाट्य एवं चलचित्रों की वर्तमान युग में उपादेयता। |
| **Unit V** | संस्कृत नाट्य एवं सिनेमा के क्षेत्र में पूर्व में किये गये कार्यों का परिचय एवं लेखन। |
| **Unit VI** | शोधकार्यों का सर्वेक्षण एवं शोधप्रविधि के अनुसार शोधकार्य। |

**Suggested Reading:**


1. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास–नाट्यशास्त्र आचार्य बलदेव उपाध्याय, उ0प्र0सं0सं0लखनऊ।
2.त्रिपाठी, राधावल्लभ, भारतीय नाट्य : स्वरूप एवं परम्परा, सागर, मध्य प्रदेश, संस्कृत परिषद् 1998।
3. द्विवेदी हजारीप्रसाद, नाट्यशास्त्र की भारतीय परम्परा एवं दशरूपक, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 1963।
4. झा, सीताराम, नाटक और रंगमंच, पटना, बिहार, राष्ट्रभाषा परिषद्, 1982।
5. भरतमुनि, नाट्यशास्त्रम् (1–4 भाग) संपादक बाबूराम शुक्ल शास्त्री, वाराणसी, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, 1984।
6. त्रिपाठी, राधावल्लभ, नाट्यशास्त्र विश्वकोश (1–4 भाग), दिल्ली, प्रतिभा प्रकाशन, 1999।
7. Gupta, C.B. Indian Theatre, Varanasi, 1954
8. Mehta Tarala, Sanskrit Play Production in Ancient India. Delhi, Motilal Banarasi Dass 1999
09. द संस्कृत ड्रामा–ए0बी0 कीथ,लन्दन ऑक्सफोर्ड वि0वि0 प्रेस,इलाई हाउस 1974।
10.संस्कृत नाट्य शिल्प और रंगमंच– रामचन्द्र सरोज, राका प्रकाशन इलाहाबाद।

अथवा

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| IAPC | 6 | 3 | 3 | 0 | | Nil |

| B.A.Honours / PG Diploma in the Core Subject-SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| subject:- SANSKRIT | | Year: IV | Semester: VII Paper- IAPC |
| Course Code: IAPC 03 | Course Title: **लोकसंस्कृति में संस्कृत का प्रभाव** | | |

**Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि**

1. विद्यार्थी लोकसंस्कृति से परिचित होंगे।
2. संस्कृतभाषा में निहित कलाओं से परिचित होंगे।
3. शोध के क्षेत्र में निपुणता प्राप्त करेंगे।

| Unit | Topic |
|---|---|
| **Unit I** | संस्कृतभाषा का परिचय एवं महत्त्व। |
| **Unit II** | लोकसंस्कृति का परिचय, क्षेत्र एवं विशेषताऐं। |
| **Unit III** | लोकसंस्कृति में संस्कृतभाषा के प्रभाव का निष्कर्ष। |
| **Unit IV** | शोधसर्वेक्षण एवं शोधप्रविधि की उपादेयता। |
| **Unit V** | शोधकार्य की भूमिका, उद्देश्य एवं महत्त्व । |
| **Unit VI** | लोकसंस्कृति में पूर्व में किये गये शोधकार्यों का सर्वेक्षण एवं संस्कृत में निहित तत्त्व। |

**Suggested Reading:**


1. संस्कृतसाहित्य का इतिहास–पद्मविभूषण डॉ बलदेव उपाध्याय, उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ।
2. भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी।
3. भारतीय संस्कृति का इतिहास–डॉ0 सत्यकेतु विद्यालंकार।
4. भारतीय संस्कृति के आधारतत्व–कृष्णकुमार।
5. हमारी प्राचीन संस्कृति–डॉ0 सत्यप्रकाश शास्त्री।
6. प्राचीन भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक भूमिका–रामजी उपाध्याय, वाराणसी।
7. कुमाऊँ के लोकसाहित्य–डॉ0 देवसिंह पोखरिया, डी0डी0 तिवारी।
8. कुमाऊँ के संस्कार गीत (लोकगीत)– शकुनादे–सरोज उपाध्याय।

अथवा

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| IAPC | 6 | 3 | 3 | 0 | | Nil |

| B.A.Honours / PG Diploma in the Core Subject-SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| subject:- SANSKRIT | | Year: IV | Semester: VII Paper- IAPC |
| Course Code: IAPC 03 | Course Title: **संस्कृतसाहित्य में आचार–मीमांसा** | | |

**Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि**

1–संस्कृतसाहित्य में निहित आचार सामग्री से परिचित होगें।

2–आचार के स्वरूप एवं उसके महत्त्व से सुपरिचित होगें।

3–विद्यार्थी आचारशिक्षा से अवगत होकर अपने व्यवहार में आचार का सम्यक्पालन करते हुए प्रत्येक कार्य को निष्ठापूर्वक करेगें।

| **Unit** | **Topic** |
|---|---|
| **Unit I** | संस्कृतसाहित्य का परिचय एवं संस्कृतसाहित्य में आचार मीमांसा। |
| **Unit II** | भारतीयसंस्कृति की विशेषाताऐं। |
| **Unit III** | आचार का स्वरूप, व्युत्पत्ति, आचार की सामग्री एवं महत्त्व।। |
| **Unit IV** | आचार के तत्त्व– सत्य, अहिंसा, अस्तेय, श्रद्धा, दान का परिचय एवं महत्त्व। |
| **Unit V** | समाज में सामञ्जस्य की भावना, प्रगतिशीलजीवन एवं पारिवारिक आचरण। |
| **Unit VI** | सामाजिक आचरण, व्यावहारिक आचरण एवं वर्तमान में आचार की प्रासंगिकता |

**Suggested Reading:**


1– ऋग्वेद में आचार सामग्री–सत्यप्रिय शास्त्री, प्रकाशक श्रीधूडमल प्रहलाद कुमार आर्य, धर्मार्थ न्यास हिन्डौन सिटी राज0।

2– मनुस्मृति–कुल्लूक भट्ट टीका सहित, चौखम्बा संस्कृत सीरीज बनारस

3– याज्ञवल्क्यस्मृति–आनन्द आश्रम संस्कृत–ग्रन्थावली, पूना।

4– रामायण का आचारदर्शन–अम्बा प्रसाद श्रीवास्तव ,भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।

5– आर्षकाव्य रामायण–गीताप्रेस गाोरखपुर।

6– आर्षकाव्य महाभारत–गीताप्रेस गाोरखपुर।

7– वेद वर्णित सदाचार एवं उसकी युग व्यवहारिकता–सुनील कुमार शाह, संस्कृति प्रकाशन वाराणसी।

8– वेदामृतम्–आचार शिक्षा–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, विश्वभारतीय अनुसन्धान परिषद् ज्ञानपुर भदोही।

9– वैदिकवाङ्मय के अनुसन्धेय पक्ष–प्रो0 हरीश्वर दीक्षित, प्रकाशक विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी।

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| Discipline Specific Course | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| Subject:- SANSKRIT | | Year: IV | Semester: VIII Paper- DSC I |
| Course Code: DSC 08 | Course Title: **काव्य एवं भारतीय संस्कृति** | | |

**Course Outcomes:**अधिगम उपलब्धि

1. कालिदासकृत मेघदूत में प्रकृतिचित्रण एवं भौगोलिक अभिधान से सुपरिचित होंगे।
2. कवि परम्परा में कालिदास के महत्त्व से सुपरिचित हो सकेंगे।
3. श्रीहर्ष के जीवनवृत्त एवं परिचय को जान सकेंगे।
4. नल एवं दमयन्ती के गुणों से सुपरिचित होंगे।
5. भारतीय संस्कृति की मुख्य विशेषताओं से सुपरिचित होंगे।

| **Unit** | **Topic** |
|---|---|
| **Unit I** | कालिदासकृत– मेघदूतम् (पूर्वमेघ) |
| **Unit II** | कालिदासकृत– मेघदूतम् (उत्तरमेघ) |
| **Unit III** | श्रीहर्षप्रणीत– नैषधीयचरितम् (प्रथम सर्ग) 1–35 श्लोक |
| **Unit IV** | श्रीहर्षप्रणीत– नैषधीयचरितम् (प्रथम सर्ग) 100–145 श्लोक |
| **Unit V** | भारतीय संस्कृति– सभ्यता एवं संस्कृति की परिभाषा एवं स्वरूप, भारतीयसंस्कृति की मुख्य विशेषताएँ, वर्ण व्यवस्था, आश्रम व्यवस्था, संस्कार, प्राचीन भारत में नारी, प्राचीन भारत में शिक्षा प्रणाली एवं शिक्षण संस्थान। |

**Suggested Reading:**


1. मेघदूतम्–डॉ0 शिवराज शास्त्री।
2. मेघदूतम् में प्रकृति एवं श्रृङ्गार–प्रो0 शालिमा तबस्सुम, अभिषेक, प्रकाशन, दिल्ली।
3. नैषधीयमहाकाव्यम्–हरगोविन्द शास्त्री।
4. नैषधमहाकाव्य–डॉ0 शिवराज शास्त्री।
5. भारतीय संस्कृति का इतिहास–डॉ0 सत्यकेतु विद्यालंकार।
6. भारतीय संस्कृति के आधारतत्व–कृष्णकुमार।
7. हमारी प्राचीन संस्कृति–डॉ0 सत्यप्रकाश शास्त्री।
8. नैषधीयचरितम्–सुरेन्द्र देव शास्त्री, गोकुल दास संस्कृत ग्रन्थमाला, वाराणसी।
9. संस्कृतसाहित्य का इतिहास–पद्मविभूषण डॉ बलदेव उपाध्याय, उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ।

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

### Group- I

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| Discipline Specific Electives | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| Subject:- SANSKRIT | | Year: IV | Semester: VIII Paper DSE II |
| Course Code: DSE 08 | Course Title:**वेदाङ्ग (निरुक्त, ऋक्प्रातिशाख्य एवं पाणिनीय शिक्षा)** | | |

**Course Outcomes:**अधिगम उपलब्धि

1. शिक्षा एवं व्याकरण शास्त्रों के पारिभाषिक पदों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. व्याकरण ग्रन्थों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
3. शिक्षा वेदाङ्ग की उपयोगिता को जान सकेंगे।
4. पाणिनीय–शिक्षा का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
5. ऋक्प्रातिशाख्य के परिचय एवं महत्त्व से अवगत होगें।

| Unit | Topic |
|---|---|
| **Unit I** | निरुक्त– अध्याय 1–2, पदों का चतुर्विध विभाजन एवं लक्षण, षड्भाव विकार, शब्द नित्यानित्यत्वविचार, उपसर्गों के द्योतकत्व, वाचकत्व का सिद्धान्त, निपात की कोटियॉ, निरुक्त अध्ययन के प्रयोजन, मन्त्रों की अर्थवत्ता, निर्वचन के सिद्धान्त एवं अधिकारी निरूपण। |
| **Unit II** | निर्वचन– निघण्टु , आचार्य, वीर, ह्रद, गो, समुद्र, वृत्र, आदित्य, उषस्, मेघ, वाक् रात्रि, उदक, नदी, अश्व, अग्नि, जातवेदस्, वैश्वानर।<br>अध्याय सात– त्रिविधा ऋचः, अनादिष्टदैवत मन्त्र, छन्दांसि, पृथिवी स्थानीय देवता वर्णन। |
| **Unit III** | पाणिनीय शिक्षा– 1–30 कारिकाएँ। |
| **Unit IV** | पाणिनीय शिक्षा– 31 से अन्त तक कारिकाएँ। |
| **Unit V** | ऋक्प्रातिशाख्यः परिभाषाएँ– समानाक्षर, सन्ध्यक्षर, अघोष, सोष्म, स्वरभक्ति, यम, रक्त, संयोग, प्रगृह्य। |

**Suggested Reading:**


1. न्यू वैदिक सलेक्शन–भाग 1 एवं 2–वाराणसी भारतीय विद्या प्रकाशन।
2. हिन्दी निरुक्त–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी।
3. प्रातिशाख्यों में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों का आलोचनात्मक अध्ययन– डॉ0 इन्द्रा ,वाराणसी।
4. पाणिनीय शिक्षा–रुद्रप्रसाद अवस्थी।
5. पाणिनीय शिक्षा–प्रो0 श्रीनारायण मिश्र।
6. वैदिक साहित्य का इतिहास–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी।
7. यास्ककृत निरुक्त– सम्पादक–उमाशंकर ऋषि।
8. ऋक्प्रातिशाख्य–एक परिशीलन–डॉ0 वीरेन्द्र कुमार वर्मा, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय शोध संस्कृत ग्रन्थमाला, वाराणसी।

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| Discipline Specific Electives | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| Subject:- SANSKRIT | | Year: IV | Semester:VIII Paper- DSE III |
| Course Code: DSE 09 | Course Title: **वाक्यपदीय एवं भाषाविज्ञान** | | |

**Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि**

1. वाक्यपदीय में भर्तृहरि के भाषा (वाक्) की प्रकृति और उसका वाह्य जगत् से सम्बन्ध की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
2. वाक्यपदीय में दार्शनिक रीतियों के विषयों जैसे–जाति, द्रव्य, काल आदि से सुपरिचित होंगे।
3. भाषाविज्ञान के स्वरूप, उद्गम एवं विकास से सुपरिचित होगे।
4. ध्वनि विज्ञान, वाक्यविज्ञान एवं अर्थविज्ञान की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

| **Unit** | **Topic** |
|---|---|
| **Unit I** | वाक्यपदीयम्– भतृहरि, 1–75 कारिकाएँ। |
| **Unit II** | वाक्यपदीयम्– भतृहरि, 76–156 कारिकाएँ। |
| **Unit III** | भाषाविज्ञान का परिचय, भाषा वर्गीकरण (आकृतिमूलक एवं परिवारमूलक) अवेस्ता, वैदिक एवं लौकिक संस्कृत। |
| **Unit IV** | ध्वनि विज्ञान (ध्वनि नियम),पद विज्ञान – दिशाएँ एवं कारण। |
| **Unit V** | वाक्यविज्ञान एवं अर्थविज्ञान –दिशाएँ एवं कारण। |

**Suggested Reading:**


1. वाक्यपदीयम्–भर्तृहरि।
2. अभिनव प्राकृत प्रकाश–नेमिचन्द्र शास्त्री।
3. संस्कृत भाषा विज्ञान–राजकिशोर सिंह।
4. भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
5. भाषा विज्ञान–डॉ0 भोलानाथ तिवारी– इलाहाबाद किताब महल।
6. भाषा विज्ञान–डॉ0 कर्णसिंह– साहित्य भण्डार सुभाष बाजार मेरठ।

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| Discipline Specific Electives | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| Programme:- SANSKRIT | | Year: IV | Semester:VIII Paper- DSE IV |
| Course Code: DSE 10 | Course Title: **मीमांसा एवं वेदान्त** | | |

**Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि**

1. विद्यार्थी वेद–वेदांग आदि सभी शास्त्रों से सुपरिचित होगे।
2. वेदान्त–दर्शन का ऐतिहासिक स्वरूप से सुपरिचित होंगे।
3. दर्शनशास्त्र के इतिहास के माध्यम से सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा एवं वेदान्त से सुपरिचित होंगे।
4. दर्शनशास्त्र के आधार पर आस्तिक एवं नास्तिक दर्शन से सुपरिचित होंगे।

| Unit | Topic |
|---|---|
| **Unit I** | अर्थसंग्रह– धर्म, भावना, विधि (गुण, विशिष्ट, उत्पत्ति, विनियोग, प्रयोग एवं अधिकार) । |
| **Unit II** | अर्थसंग्रह– मन्त्र, नामधेय, निषेध, अर्थवाद (अपूर्व, नियम एवं परिसंख्या विधि)। |
| **Unit III** | वेदान्तसार– प्रारम्भ से सृष्टि प्रक्रिया। |
| **Unit IV** | वेदान्तसार– विशिष्ट अध्यारोप से समाप्ति पर्यनत। |
| **Unit V** | मीमांसा–दर्शन एवं वेदान्त–दर्शन का इतिहास। |

**Suggested Reading:**


1. वेदान्तसार–रामशरण त्रिपाठी।
2. वेदान्तसार–राममूर्ति शर्मा।
3. वेदान्तसार–महेशचन्द्र भारतीय।
4. भारतीय दर्शन–बलदेव उपाध्याय।
5. भारतीय दर्शन–उमेश मिश्र।
6. भारतीय दर्शन–दत्त एवं चटर्जी।
7. Indian Philosophy- Das Gupta .

अथवा

**Group- II**

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| Discipline Specific Electives | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| Programme:- SANSKRIT | | Year: IV | Semester:VIII Paper-DSE II |
| Course Code: DSE 08 | Course Title: **वेदाङ्ग (निरुक्त, ऋक्प्रातिशाख्य एवं पाणिनीय शिक्षा)** | | |

**Course Outcomes:**अधिगम उपलब्धि

1. शिक्षा एवं व्याकरण शास्त्रों के पारिभाषिक पदों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. व्याकरण ग्रन्थों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
3. शिक्षा वेदाङ्ग की उपयोगिता को जान सकेंगे।
4. पाणिनीय–शिक्षा का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
5. ऋक्प्रातिशाख्य के परिचय एवं महत्त्व से अवगत होगें।

| **Unit** | **Topic** |
|---|---|
| **Unit I** | निरुक्त– अध्याय 1–2, पदों का चतुर्विध विभाजन एवं लक्षण, षड्भाव विकार, शब्द नित्यानित्यत्वविचार, उपसर्गों के द्योतकत्व, वाचकत्व का सिद्धान्त, निपात की कोटियॉ, निरुक्त अध्ययन के प्रयोजन, मन्त्रों की अर्थवत्ता, निर्वचन के सिद्धान्त एवं अधिकारी निरूपण। |
| **Unit II** | निर्वचन– निघण्टु , आचार्य, वीर, ह्रद, गो, समुद्र, वृत्र, आदित्य, उषस्, मेघ, वाक् , रात्रि, उदक, नदी, अश्व, अग्नि, जातवेदस्, वैश्वानर।<br>अध्याय सात– त्रिविधा ऋचः, अनादिष्टदैवत मन्त्र, छन्दांसि, पृथिवी स्थानीय देवता वर्णन। |
| **Unit III** | पाणिनीय शिक्षा– 1–30 कारिकाएँ। |
| **Unit IV** | पाणिनीय शिक्षा– 31 से अन्त तक कारिकाएँ। |
| **Unit V** | ऋक्प्रातिशाख्यः परिभाषाएँ– समानाक्षर, सन्ध्यक्षर, अघोष, सोष्म, स्वरभक्ति, यम, रक्त, संयोग, प्रगृह्य। |

**Suggested Reading:**


1. न्यू वैदिक सलेक्शन–भाग 1 एवं 2–वाराणसी भारतीय विद्या प्रकाशन।
2. हिन्दी निरुक्त–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी।
3. प्रातिशाख्यों में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों का आलोचनात्मक अध्ययन–डॉ0 इन्द्रा,वाराणसी।
4. पाणिनीय शिक्षा–रुद्रप्रसाद अवस्थी।
5. वैदिक साहित्य का इतिहास–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी।
6- यास्ककृ

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| Discipline Specific Electives | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| Programme:- SANSKRIT | | Year: IV | Semester:VIII Paper-DSE III |
| Course Code: DSE 09 | Course Title:**वाक्यपदीय एवं भाषाविज्ञान** | | |

**Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि**

1. वाक्यपदीय में भर्तृहरि के भाषा (वाक्) की प्रकृति और उसका वाह्य जगत् से सम्बन्ध की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
2. वाक्यपदीय में दार्शनिक रीतियों के विषयों जैसे–जाति, द्रव्य, काल आदि से सुपरिचित होंगे।
3. भाषाविज्ञान के स्वरूप, उद्गम एवं विकास से सुपरिचित होगे।
4. ध्वनि विज्ञान, वाक्यविज्ञान एवं अर्थविज्ञान की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

| **Unit** | **Topic** |
|---|---|
| **Unit I** | वाक्यपदीयम्– भर्तृहरि, 1–75 कारिकाएँ। |
| **Unit II** | वाक्यपदीयम्– भर्तृहरि, 76–156 कारिकाएँ। |
| **Unit III** | भाषाविज्ञान का परिचय, भाषा वर्गीकरण (आकृतिमूलक एवं परिवारमूलक) अवेस्ता वैदिक एवं लौकिक संस्कृत। |
| **Unit IV** | ध्वनि विज्ञान (ध्वनि नियम),पद विज्ञान – दिशाएँ एवं कारण। |
| **Unit V** | वाक्यविज्ञान एवं अर्थविज्ञान – दिशाएँ एवं कारण। |

**Suggested Reading:**

1. वाक्यपदीयम्–भर्तृहरि।
2. अभिनव प्राकृत प्रकाश–नेमिचन्द्र शास्त्री।
3. संस्कृत भाषा विज्ञान–राजकिशोर सिंह।
4. भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी।
5. भाषा विज्ञान–डॉ0 भोलानाथ तिवारी–इलाहाबाद किताब महल।
6. भाषा विज्ञान–डॉ0 कर्णसिंह–साहित्य भण्डार सुभाष बाजार मेरठ।

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| General Electives | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| Programme:-SANSKRIT | | Year: IV | Semester: VIII Paper- GE IV |
| Course Code: GE 09 | Course Title:**उत्तराखण्ड के संस्कृत साहित्यकार** | | |

**Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि**

1. उत्तराखण्ड के संस्कृतसाहित्य से सुपरिचित होंगे।
2. उत्तराखण्ड के संस्कृतसाहित्यकारों से सुपरिचित होंगे।
3. उत्तराखण्ड के संस्कृतसाहित्य के विविध आयामों से परिचित होंगे।
4. उत्तराखण्ड की संस्कृत पत्र–पत्रिकाओं से सुपरिचित होंगे।

| **Unit** | **Topic** |
|---|---|
| **Unit I** | उत्तराखण्ड के 19 वीं शताब्दी के संस्कृतसाहित्यकार–परिचय। |
| **Unit II** | उत्तराखण्ड के 20वीं शताब्दी से अद्यतन संस्कृतसाहित्यकार–परिचय। |
| **Unit III** | उत्तराखण्ड में उपलब्ध संस्कृतसाहित्य की विधायें। |
| **Unit IV** | उत्तराखण्ड में प्रकाशित संस्कृत पत्र–पत्रिकाओं का महत्त्व। |

**Suggested Reading:**


1. आधुनिक संस्कृतसाहित्य का इतिहास–पद्मभूषणपं0 बलदेव उपाध्याय।
2. उत्तराखण्ड के संस्कृत रचनाकार–प्रारम्भ से अद्यतन –प्रो0 शालिमा तबस्सुम, परिमल पब्लिकेशन, दिल्ली।
3. आधुनिक संस्कृत नाटक–रामजी उपाध्याय।
4. संस्कृत का अर्वाचीन समीक्षात्मक काव्यशास्त्र–प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र।
5. संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–पद्मश्री कपिल देव द्विवेदी,संस्कृतसाहित्य संस्थान,37 कचेहरि मार्ग इलाहाबाद।
6. साहित्यविमर्श–प्रोफेसर रहस विहारी द्विवेदी।
7. संस्कृतसाहित्य का अभिनव इतिहास–प्रो0 राधबल्लभ त्रिपाठी, सागर विश्वविद्याालय प्रकाशन।
8. विंशतिशताब्दीसंस्कृतकाव्यामृतम्–प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र।
9. उत्तराखण्ड के संस्कृत साहित्यकार अतीत से वर्तमान–प्रो0 शालिमा तबस्सुम, अभिषेक प्रकाशन, दिल्ली।

**अथवा**
**Group- III**

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| Discipline Specific Electives | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| Programme:- SANSKRIT | | Year: IV | Semester:VIII Paper-DSE II |
| Course Code: DSE 08 | Course Title: **वेदाङ्ग (निरुक्त, ऋक्प्रातिशाख्य एवं पाणिनीय शिक्षा)** | | |

**Course Outcomes:** अधिगम उपलब्धि

1. शिक्षा एवं व्याकरण शास्त्रों के पारिभाषिक पदों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. व्याकरण ग्रन्थों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
3. शिक्षा वेदाङ्ग की उपयोगिता को जान सकेंगे।
4. पाणिनीय–शिक्षा का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
5. ऋक्प्रातिशाख्य के परिचय एवं महत्त्व से अवगत होगें।

| Unit | Topic |
|---|---|
| **Unit I** | निरुक्त– अध्याय 1–2, पदों का चतुर्विध विभाजन एवं लक्षण, षड्भाव विकार, शब्द नित्यानित्यत्वविचार, उपसर्गों के द्योतकत्व, वाचकत्व का सिद्धान्त, निपात की कोटियॉ, निरुक्त अध्ययन के प्रयोजन, मन्त्रों की अर्थवत्ता, निर्वचन के सिद्धान्त एवं अधिकारी निरूपण। |
| **Unit II** | निवेचन– निघण्टु , आचार्य, वीर, ह्रद, गो, समुद्र, वृत्र, आदित्य, उषस्, मेघ, वाक् , रात्रि, उदक, नदी, अश्व, अग्नि, जातवेदस्, वैश्वानर।<br>अध्याय सात– त्रिविधा ऋचः, अनादिष्टदैवत मन्त्र, छन्दांसि, पृथिवी स्थानीय देवता वर्णन। |
| **Unit III** | पाणिनीय शिक्षा–01–30 कारिकाएँ। |
| **Unit IV** | पाणिनीय शिक्षा– 31 से अन्त तक कारिकाएँ। |
| **Unit V** | ऋक्प्रातिशाख्यः परिभाषाएँ– समानाक्षर, सन्ध्यक्षर, अघोष, सोष्म, स्वरभक्ति, यम, रक्त, संयोग, प्रगृह्य। |

**Suggested Reading:**


1. न्यू वैदिक सलेक्शन–भाग 1 एवं 2–वाराणसी भारतीय विद्या प्रकाशन।
2. हिन्दी निरुक्त–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी।
3. प्रातिशाख्यों में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों का आलोचनात्मक अध्ययन– डॉ0 इन्द्रा ,वाराणसी।
4. पाणिनीय शिक्षा–रुद्रप्रसाद अवस्थी।
5. पाणिनीय शिक्षा–प्रो0 श्रीनारायण मिश्र
6. वैदिक साहित्य का इतिहास–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी।
7. यास्ककृत निरुक्त– सम्पादक–उमाशंकर ऋषि।
8. ऋक्प्रातिशाख्य–एक परिशीलन–डॉ0 वीरेन्द्र कुमार वर्मा, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय शोध संस्कृत ग्रन्थमाला, वाराणसी।

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| General Electives | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| Programme:- SANSKRIT | | Year: IV | Semester: VIII Paper-GE III |
| Course Code: GE0 9 | Course Title:**उत्तराखण्ड के संस्कृत साहित्यकार** | | |

**Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि**

1. उत्तराखण्ड के संस्कृतसाहित्य से सुपरिचित होंगे।
2. उत्तराखण्ड के संस्कृतसाहित्यकारों से सुपरिचित होंगे।
3. उत्तराखण्ड के संस्कृतसाहित्य के विविध आयामों से परिचित होंगे।
4. उत्तराखण्ड की संस्कृत पत्र–पत्रिकाओं से सुपरिचित होंगे।

| **Unit** | **Topic** |
|---|---|
| **Unit I** | उत्तराखण्ड के 19 वीं शताब्दी के संस्कृतसाहित्यकार–परिचय। |
| **Unit II** | उत्तराखण्ड के 20वीं शताब्दी से अद्यतन संस्कृतसाहित्यकार–परिचय। |
| **Unit III** | उत्तराखण्ड में उपलब्ध संस्कृतसाहित्य की विधायें। |
| **Unit IV** | उत्तराखण्ड में प्रकाशित संस्कृत पत्र–पत्रिकाओं का परिचय एवं महत्त्व। |

**Suggested Reading:**


1. आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास–पद्मभूषणपं0 बलदेव उपाध्याय।
2. उत्तराखण्ड के संस्कृत रचनाकार–प्रारम्भ से अद्यतन –प्रो0 शालिमा तबस्सुम, परिमल पब्लिकेशन, दिल्ली।
3. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास–सप्तम खण्ड–सम्पादक डॉ0 जगन्नाथ पाठक, उ0प्र0सं0सं0लखनऊ।
4. आधुनिक संस्कृत नाटक–रामजी उपाध्याय।
5. संस्कृत का अर्वाचीन समीक्षात्मक काव्यशास्त्र–प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र।
6. काव्यालंकारकारिका–प्रोफेसर रेवाप्रसाद द्विवेदी।
7. साहित्यविमर्श–प्रोफेसर रहस विहारी द्विवेदी।
8. संस्कृतसाहित्य का अभिनव इतिहास–प्रो0 राधबल्लभ त्रिपाठी।
9. विंशतिशताब्दीसंस्कृतकाव्यामृतम्– प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र।
10. अभिराजयशोभूषण्म्–प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र।
11. उत्तराखण्ड के संस्कृत साहित्यकार अतीत से वर्तमान–प्रो0 शालिमा तबस्सुम, अभिषेक प्रकाशन, दिल्ली।

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| General Electives | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| Programme:-SANSKRIT | | Year: IV | Semester: VIII Paper-GE IV |
| Course Code: GE 10 | Course Title: **आर्षकाव्य–महाभारत** | | |

**Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि**

1. महाभारत का सामान्य परिचय एवं नैतिक शिक्षा को जान सकेंगे।
2. महाभारत में निहित सामाजिक चेतना की शिक्षा से अवगत हो सकेंगे।
3. विद्यार्थी भारतीय पौराणिक कथाओं में निहित शिक्षा से सुपरिचित होगें।
4. महाभारत की कथा में वर्णित धर्मशास्त्र की सभी सत्य की शिक्षा से विद्यार्थी अवगत होगें।

**Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): 4-0-0**

| Unit | Topic |
|---|---|
| **Unit I** | महर्षिव्यास एवं महाभारतग्रन्थ का परिचय। |
| **Unit II** | महाभारत के पर्वों का संक्षिप्त परिचय। |
| **Unit III** | महाभारत का माहात्म्य एवं प्रमुख पात्रों के चरित्र से प्राप्त शिक्षा।। |
| **Unit IV** | महाभारत में वर्णित विष्णुसहस्रनामस्तोत्र का अर्थ एवं महत्त्व। |

**Suggested Reading:**


1. सम्पूर्णमहाभारत छःभागों में–साहित्याचार्य पण्डित रामनारायण दत्त शास्त्री पाण्डे; ''राम'' गीताप्रेस गोरखपुर सं0 2070।
2. महाभारत–श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, स्वाध्यायमण्डल।
3. महाभारत का अर्थ,डी0डी0–हर्ष, वाग्देवी प्रकाशन वीकानेर 2014।
4. संस्कृत–वाङ्मय का बृहद् इतिहास–आर्षकाव्य, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ।
5. संस्कृत–साहित्य का इतिहास–पद्मभूषण आचार्य बलदेव उपाध्याय।उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ।
6. महाभारत में श्रीकृष्ण का विलक्षण व्यक्तित्व–डॉ0 भुवन चन्द्र पाठक।

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| IAPC | 6 | 3 | 3 | 0 | | Nil |

| PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| Programme:-SANSKRIT | | Year: IV | Semester: VIII Paper- IAPC |
| Course Code: IAPC 2 | Course Title: **अथर्ववेद एवं आयुर्वेद चिकित्सा** | | |

**Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि**

1. अथर्ववेदीय चिकित्सा से सुपरिचित होंगे।
2. अथर्ववेद में वर्णित औषधियों का ज्ञान प्राप्त होगे।
3. चिकित्सा एवं वनस्पतिशास्त्र के माध्यम से सह–अध्ययन संदृष्टि का विकास होगा।
4. आयुर्वेद साहित्य का सामान्य परिचय प्राप्त होगा।
5. आयुर्वेदीय अष्टांग–चिकित्सा से सुपरिचित होंगे।

| Unit | Topic |
|---|---|
| **Unit I** | अथर्ववेद का सामान्य परिचय एवं अथर्ववेद में चिकित्सा। |
| **Unit II** | अथर्ववेद में औषधिविज्ञान। |
| **Unit III** | आयुर्वेद का सामान्य परिचय एवं महत्त्व। |
| **Unit IV** | आयुर्वेद में अष्टांग चिकित्सा परिचय एवं उपयोगिता। |
| **Unit V** | अथर्ववेद एवं आयुर्वेद में पथ्यापथ्य विमर्श–एक अध्ययन। |
| **Unit VI** | औषधिविज्ञान एवं आयुर्वेदीय–चिकित्सा में शोधकार्यों का सर्वेक्षण एवं शोधप्रविधि के अनुसार शोधकार्य। |

**Suggested Reading:**


1. अथर्ववेद में चिकित्सा एवम् ओषधि–विज्ञान–डॉ0 शलिनी शुक्ला, अक्षयवट प्रकाशन, प्रयागराज।
2. अथर्ववेद का सुबोधभाष्य–श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, स्वाध्याय मण्डल पारडी, गुजरात।
3. आयुर्वेद का वैज्ञानिक इतिहास–आचार्य प्रियव्रत शर्मा, चौखम्बा ओरण्टलिया, वाराणसी।
4. आयुर्वेद का प्रारम्भिक इतिहास–प्रो0 वनवारी लाल गौड़, राम आयुर्वेद संस्कृत बुक प्रतिष्ठान, दिल्ली।
5. द्रव्यगुण विज्ञान–आचार्य प्रियव्रत शर्मा, चौखम्बा सुरभारती अकादमी, वाराणसी।
6. वेदामृतम्–सुखी जीवन–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, विश्वभारती अनुसंधान परिषद् ज्ञानपुर, भदोही।
7. आयुर्वेद परिभाषा कोश–वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, भारत सरकार।
8. वेदों में आयुर्वेद–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, विश्वभारती अनुसंधान परिषद् ज्ञानपुर, भदोही।
9.अथर्ववेद–विश्वेश्वरानन्द वैदिक संस्थान– होशियारपुर।

अथवा

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| IAPC | 6 | 3 | 3 | 0 | | Nil |

| PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| Programme:-SANSKRIT | | Year: IV | Semester: VIII Paper- IAPC |
| Course Code: IAPC 2 | Course Title: **संस्कृतसाहित्य में वर्णित समाज** | | |

**Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि**

1. संस्कृत साहित्य से परिचय प्राप्त होगा।
2. संस्कृत साहित्य की अनेक विशेषताओं से अवगत होंगें।
3. संस्कृत साहित्य में वर्णित समाज के अध्ययन से विद्यार्थी सामाजिक गतिविधियों से एवं संस्कारों से परिचित होंगे।

| Unit | Topic |
|---|---|
| **Unit I** | संस्कृतवाङ्मय का संक्षिप्त परिचय एवं क्रमिक विकास। |
| **Unit II** | संस्कृत साहित्य में वर्णित भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ। |
| **Unit III** | सामाजिक तत्त्वों का विश्लेषण एवं महत्त्व। |
| **Unit IV** | पारिवारिक एवं सामाजिक तत्त्वों का तुलनात्मक विश्लेषण। |
| **Unit V** | पर्यावरण के क्षेत्र में संस्कृत एवं समाज का योगदान। |
| **Unit VI** | राष्ट्र के विकास में समाज का योगदान एवं पूर्व में किये गये शोधकार्यों का सर्वेक्षण एवं शोधप्रविधि के अनुसार शोधकार्य। |

**Suggested Reading:**


1. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–पद्मश्री डॉ0 कपिल देव द्विवेदी, संस्कृत साहित्य संस्थान, इलाहाबाद।
2. भारतीय संस्कृति–प्रो0 किरण टण्डन, ईस्टर्न बुक लिंकर्स ,दिल्ली।
3. वेदामृतम्–सुखी समाज–पद्मश्री डॉ0 कपिल देव द्विवेदी, विश्वभारती अनुसंधान परिषद् ज्ञानपुर, भदोही।
4. कालिदास ग्रन्थावली–चौखम्बा विद्या भवन वाराणसी ।
5. वेदकालीन समाज–डॉ0 शिवदत्त ज्ञानी,चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी।
6. श्रीमद्रामायण–महर्षिवाल्मीकि प्रणीत गीता प्रेस गोरखपुर।
7. श्रीमद्महाभारत–महर्षि वेद व्यास प्रणीत गीता प्रेस गोरखपुर प्रथम संस्करण।
8. वैदिक साहित्य और संस्कृति–पद्मविभूषण आचार्य बलदेव उपाध्याय–काशी शारदा मन्दिर।
9. वेदों में समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र और शिक्षाशास्त्र–पद्मश्री डॉ0 कपिल देव द्विवेदी, विश्वभारती अनुसंधान परिषद् ज्ञानपुर, भदोही।
10. भारतीय समाज व्यवस्था–राम आहूजा रावत,पब्लिकेशन जयपुर, नयी दिल्ली।
11. भारतीय समाज का स्वरूप–डॉ0 सीताराम झा,बिहार हिन्दी ग्रन्थ, अकादमी,पटना।
12. वैदिकवाङ्मय के अनुसन्धेय पक्ष–प्रो0 हरीश्वर दीक्षित,प्रकाशकविश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी।

**अथवा**

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| IAPC | 6 | 3 | 3 | 0 | | Nil |

| PG DIPLOMA IN THE CORE SUBJECT-SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| Programme:- SANSKRIT | | Year: IV | Semester: VIII Paper- IAPC |
| Course Code: IAPC 2 | Course Title: **भारतीय शिक्षा व्यवस्था : प्रासंगिकता** | | |

**Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि**

वैदिकवाङ्मय से लेकर लौकिकसाहित्य में भारतीयशिक्षा व्यवस्था के अनेक उदाहरण द्रष्टव्य है, जिनके अवलोकन एवं अध्ययन से विद्यार्थी प्राचीन शिक्षा व्यवस्था से सुपरिचित होंगे। भारतीय शिक्षा व्यवस्था को वर्तमान की शिक्षा व्यवस्था से सामंजस्य करते हुए समाज का एवं देश का विकास करने में सक्षम होंगे। साथ ही हमारे भारतीय शिक्षा व्यवस्था रूपी धरोहर को अग्रेसित करने में सफल होंगे।

| **Unit** | **Topic** |
|---|---|
| **Unit I** | भारतीय शिक्षाव्यवस्था की परम्परा एवं महत्त्व। |
| **Unit II** | वैदिककालीन शिक्षाव्यवस्था। |
| **Unit III** | रामायणकालीन शिक्षाव्यवस्था। |
| **Unit IV** | महाभारतकालीन मध्यकालीन शिक्षाव्यवस्था। |
| **Unit V** | आधुनिक शिक्षाव्यवस्था । |
| **Unit VI** | वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्राचीन भारतीय शिक्षाव्यवस्था की प्रासंगिकता। |

**Suggested Reading:**


1. प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास–ए0एल0 बाशम– अद्भूत भारत सहाय स्वरूप– मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।
2. हिन्दू संस्कार–राजबली पाण्डे–मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।
3. संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास–पद्मविभूषण आचार्य बलदेव उपाध्याय, उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी लखनऊ।
4. कालिदास ग्रन्थावली–चौखम्बा विद्या भवन वाराणसी ।
5. रामायण–महर्षि वाल्मीकिकृत–गीता प्रेस, गोरखपुर।
6. महाभारत–महर्षि वेदव्यासकृत–गीता प्रेस, गोरखपुर।
7. वैदिक शिक्षा पद्धति–डॉ0 भास्कर मिश्र, महर्षि सान्दीपनि वेदविद्याा प्रतिष्ठान, उज्जैन।
8. भारतीय संस्कृति–प्रो0 किरण टण्डन, ईस्टर्न बुक लिंकस,दिल्ली।
9. शिक्षा में मानवीय मूल्य एवं व्यावसायिक नैतिकता– राजकीय रजा कालेज, रामपुर।
10. वैदिकवाङ्मय के अनुसन्धेय पक्ष–प्रो0 हरीश्वर दीक्षित, प्रकाशक विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी।

| PG Second Year | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| V | IX | **DSC / Credit 4** | **DSE / Credit 4** | **DSE / Credit 4** | **DSE / Credit 4** | **Dissertation /6 Credit** | | | |
| | | काव्यशास्त्र भाग– 01 | नाट्यशास्त्र एवं साहित्यशास्त्रभाग– 01 | व्याकरण–महाभाष्य, सिद्धिप्रक्रिया एवं सूत्र व्याख्या | गद्य एवं ऐतिहासिक काव्य | Dissertation on Major<br>OR<br>Dissertation on Minor<br>OR<br>Academic Project/Entrepreneurship | | | |
| | | | OR | | | वेदों में विज्ञान<br>**अथवा**<br>वेदों में राजनीति<br>**अथवा**<br>वेदों में लोककल्याण | | | |
| | | | **DSE / Credit 4** | **DSE / Credit 4** | **GE / Credit 4** | | | | |
| | | | नाट्यशास्त्र एवं साहित्यशास्त्रभाग– 01 | व्याकरण–महाभाष्य, सिद्धिप्रक्रिया एवं सूत्र व्याख्या | धर्मशास्त्र–सामाजिक एवं विधिसम्बद्ध | | | | |
| | | | OR | | | | | | |
| | | | **DSE / Credit 4** | **GE / Credit 4** | **GE / Credit 4** | | | | |
| | | | नाट्यशास्त्र एवं साहित्यशास्त्रभाग– 01 | धर्मशास्त्र–सामाजिक एवं विधिसम्बद्ध | नीतिशास्त्र–राजनीतिसम्बद्ध | | | | |
| | X | **DSC / Credit 4** | **DSE / Credit 4** | **DSE / Credit 4** | **DSE / Credit 4** | **Dissertation /6 Credit** | | | |
| | | काव्यशास्त्र भाग– 02 | नाट्यशास्त्र एवं साहित्यशास्त्रभाग– 02 | संस्कृत रूपकः–प्रकरण, चम्पूकाव्य एवं निबन्ध | अर्वाचीनसंस्कृतसाहित्य एवं साहित्यकार | Dissertation on Major<br>OR<br>Dissertation on Minor<br>OR<br>Academic Project/Entrepreneur | | | |

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | ship | | | |
| | | | OR | | | योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा<br>**अथवा**<br>भारतीय वास्तुशास्त्र की प्रासङ्गिकता<br>**अथवा**<br>भारतीय पुराभिलेख एवं लिपियाँ | | | |
| | | | **DSE / Credit 4** | **DSE / Credit 4** | **GE / Credit 4** | | | | |
| | | | नाट्यशास्त्र एवं साहित्यशास्त्रभाग–02 | संस्कृत रूपकः–प्रकरण, चम्पूकाव्य एवं निबन्ध | कौटिलीयं–अर्थशास्त्रम् (विनयाधिकरणम्) | | | | |
| | | | OR | | | | | | |
| | | | **DSE / Credit 4** | **GE / Credit 4** | **GE / Credit 4** | | | | |
| | | | नाट्यशास्त्र एवं साहित्यशास्त्रभाग–02 | कौटिलीयं–अर्थशास्त्रम् (विनयाधिकरणम्) | पातञ्जलयोगसूत्र | | | | |

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| Discipline Specific Course | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| Master's in – SANSKRIT | | |
|---|---|---|
| Programme:- Master's in SANSKRIT | Year: V | Semester: IX Paper-DSC I |
| Course Code: DSC 09 | Course Title: **काव्यशास्त्र– भाग–01** | |

**Course Outcomes:**अधिगम उपलब्धि

1. काव्यशास्त्र के स्वरूप एवं लक्षण से सुपरिचित होंगे।
2. काव्यशास्त्र की अवधारणा का ज्ञान हो सकेगा।
3. काव्यशास्त्र में काव्यसौन्दर्य के आधायक जिन गुण, रीति, अलंकार, ध्वनि आदि तत्त्वों से सुपरिचित होंगे।
4. काव्यशास्त्र की परम्परा से अवगत हो सकेंगे।
5. विद्यार्थी काव्यशास्त्र के उद्भव और विकास से सुपरिचित होकर काव्यशास्त्रीय तत्त्वों को समझने में सक्षम होंगे।

| **Unit** | **Topic** |
|---|---|
| **Unit I** | काव्यशास्त्र की परम्परा, काव्यशास्त्र के आचार्य एवं सम्प्रदाय परिचय। |
| **Unit II** | ध्वन्यालोक– प्रथम उद्योत 1–8 कारिका पर्यनत। |
| **Unit III** | ध्वन्यालोक– प्रथम उद्योत 9–19 कारिका पर्यनत। |
| **Unit IV** | वक्रोक्तिजीवितम्– प्रथमोन्मेष– प्रारम्भ से पदपदार्थवक्रता पर्यनत। |
| **Unit V** | वक्रोक्तिजीवितम्– प्रथमोन्मेष– वाक्य वक्रता से समाप्ति पर्यनत। |

**Suggested Reading:**


1. काव्यप्रकाश–वामन झलकीकर, चौखम्बा संस्कृत पगतिष्ठान,दिल्ली।
2. काव्यप्रकाश–श्रीनिवास शास्त्री, साहित्य भण्डार मेरठ।
3. संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास–पी0 वी0 काणे,मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी।
4. ध्वन्यालोक– व्याख्याकार–आचार्य विश्वेश्वर, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी।
5. आधुनिक संस्कृत काव्यशास्त्र–डॉ0 आनन्द श्रीवास्तव, ईस्टर्न बुक लिंकर्स दिल्ली।
6. ध्वन्यालोक (लोचन टीका सहित)–व्याख्याकार–जगन्नाथ पाठक, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
7. वक्रोक्तिजीवितम्–डॉ0 वेदप्रकाश डिंडोरिया, शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली।
8. ध्वन्यालोक– व्याख्याकार–रमासागर त्रिपाठी, मोती लाल बनारसी दास, दिल्ली।
9. भारतीय काव्यशास्त्र का इतिहास– राजवंश सहाय हीरा
10. संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास–एस0के0 डे, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी पटना।

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

**Group- I**

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| Discipline Specific Electives | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| | | | |
|---|---|---|---|
| Master's in SANSKRIT | | | |
| Programme:- Master's in SANSKRIT | | Year: V | Semester:IX Paper- DSE II |
| Course Code: DSE 11 | Course Title: **साहित्यशास्त्र एवं नाट्यशास्त्र– भाग–01** | | |

**Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि**

1. नाट्यशास्त्र के उद्भव से सुपरिचित होंगे।
2. साहित्यशास्त्र के सिद्धान्तों से अवगत होंगे।
3. दशरूपक ग्रन्थ के प्रयोजनों से परिचित हो सकेंगे।
4. नाट्य विषय ज्ञान में वृद्धि कर सकेंगे।
5. रूपकों के भेदक–तत्वों से परिचित हो सकेंगें
6. कथावस्तु के स्वरूप को समझ सकेंगे।

| Unit | Topic |
|---|---|
| **Unit I** | नाट्यशास्त्र– भरतप्रणीत– प्रथम अध्याय। |
| **Unit II** | नाट्यशास्त्र– भरतप्रणीत– द्वितीय अध्याय। |
| **Unit III** | धनंजय विरचित दशरूपकम्– प्रथम प्रकाश। |
| **Unit IV** | काव्यमीमांसा– राजशेखरकृत प्रथमअधिकरण के प्रथम अध्याय से पंचम अध्याय तक। |
| **Unit V** | काव्यमीमांसा– राजशेखरकृत प्रथमअधिकरण के षष्ठ अध्याय से दशम अध्याय तक। |

**Suggested Reading:**


1. नाट्यशास्त्र–डॉ0 सत्यार्थ प्रकाश शर्मा।
2. नाट्यशास्त्र–बाबूलाल शुक्ल, चौखम्बा संस्कृत संस्थान,वाराणसी।
3. नाट्यशास्त्र–डॉ0 सुधाकर मालवीय।
4. संस्कृत नाट्य सिद्धान्त–डॉ0 रमाकान्त त्रिपाठी।
5. दशरूपकम्–भोलाशंकर व्यास,चौखम्बा विद्याभवन,वाराणसी।
6. दशरूपकम्–श्रीनिवास शास्त्री,साहित्य भण्डार, मेरठ।
7. राजशेखरकृत–काव्यमीमांसा व्याख्याकार–डॉ0 गंगासागर राय।

8. नाट्यशास्त्र का इतिहास–डॉ0 कपिल देव द्विवेदी।

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| Discipline Specific Electives | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| Master's in SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| Programme:- Master's in SANSKRIT | | Year: V | Semester: IX Paper-DSE III |
| Course Code: DSE 12 | Course Title:**व्याकरण– महाभाष्य, सिद्धिप्रकिया एवं सूत्र व्याख्या** | | |

**Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि**

1. महाभाष्य व्याकरणिक अवधारणा को जान पायेंगे।
2. लघुसिद्धान्तकौमुदी के आधार पर धातु प्रक्रिया के विषय से परिचित होंगे।
3. लघुसिद्धान्तकौमुदी के माध्यम से आत्मनेपद एवं परस्मैपद से सुपरिचित होंगे।

| Unit | Topic |
|---|---|
| **Unit I** | महाभाष्य– प्रथमाह्निक– आरम्भ से व्याकरण प्रयोजन पर्यनत। |
| **Unit II** | महाभाष्य– प्रथमाह्निक–शब्द स्वरुप से वर्ण प्रयोजनानि समाप्ति पर्यनत। |
| **Unit III** | लघुसिद्धान्तकौमुदी– भू धातु प्रक्रिया (लट्, लिङ्, लृट्, लोट् और लङ्)। |
| **Unit IV** | लघुसिद्धान्तकौमुदी– एध् धातु प्रक्रिया (लट्, लिङ्, लृट्, लोट् और लङ्)। |
| **Unit V** | लघुसिद्धान्तकौमुदी– आत्मनेपद एवं परस्मैपद सूत्र व्याख्या। |

**Suggested Reading:**


1. महाभाष्य–पं0 चारुदेव शास्त्री।
2. महाभाष्य–प्रदीपोद्योतटीका सहित–वेदव्रत।
3. सिद्धान्तकौमुदी–तत्त्वबोधिनी–पं0 गिरधर शर्मा चतुर्वेदी।
4. तिङन्त प्रकरणम्–डॉ0 लज्जा भट्ट।
5. लघुसिद्धान्तकौमुदी–श्रीवरदराजकृत, व्याख्याकार श्रीधरानन्दशास्त्री।

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| Discipline Specific Electives | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| Master's in SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| Programme:- Master's in SANSKRIT | | Year: V | Semester: IX Paper-DSE IV |
| Course Code: DSE 13 | Course Title:**गद्य एवं ऐतिहासिक काव्य** | | |

**Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि**

1. संस्कृत गद्यकाव्य की परम्परा से सुपरिचित होंगे।
2. गद्यकाव्य के भेद एवं प्रकार के विषय में अध्ययन कर सकेंगे।
3. गद्यकाव्य का उद्भव एवं उत्कर्ष के विषय से सुपरिचित होंगे।

| **Unit** | **Topic** |
|---|---|
| **Unit I** | गद्यकाव्य एवं ऐतिहासिककाव्य परम्परा एवं विकास। |
| **Unit II** | कादम्बरी–उज्जयिनी वर्णन से **(सूतिकागृह को छोड़कर)** कुमारवर्णन पर्यन्त। |
| **Unit III** | कादम्बरी– इन्द्रायुध वर्णन से राजकुल वर्णन पर्यन्त। |
| **Unit IV** | विक्रमांकदेवचरितम्–प्रथम सर्ग प्रारम्भ से 50 श्लोक तक। |
| **Unit V** | विक्रमांकदेवचरितम्– प्रथम सर्ग 51 श्लोक से सर्गान्त पर्यन्त। |

**Suggested Reading:**


1. कादम्बरी–श्रीनिवास मिश्र।
2. कादम्बरी–कृष्णमोहन शास्त्री।
3. कादम्बरी एक सांस्कृतिक अध्ययन–वासुदेवशरण अग्रवाल।
4. विक्रमांकदेवचरितम्–बी0एस0 मुरारीलाल नागर।
5. विक्रमांकदेवचरितम्–हरगोविन्द शास्त्री।
6. संस्कृत साहित्य का इतिहास– बलदेव उपाध्याय

अथवा

**Group- II**

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| Discipline Specific Electives | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| Master's in - SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| Programme:- Master's in SANSKRIT | | Year: V | Semester: IX Paper-DSE II |
| Course Code: DSE 11 | Course Title: **साहित्यशास्त्र एवं नाट्यशास्त्र – भाग–01** | | |

**Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि**

1. नाट्यशास्त्र के उद्भव से सुपरिचित होंगे।
2. साहित्यशास्त्र के सिद्धान्तों से अवगत होंगे।
3. दशरूपक ग्रन्थ के प्रयोजनों से परिचित हो सकेंगे।
4. नाट्य विषय ज्ञान में वृद्धि कर सकेंगे।
5. रूपकों के भेदक–तत्वों से परिचित हो सकेंगें

| Unit | Topic |
|---|---|
| **Unit I** | नाट्यशास्त्र– भरतप्रणीत– प्रथम अध्याय। |
| **Unit II** | नाट्यशास्त्र– भरतप्रणीत– द्वितीय अध्याय। |
| **Unit III** | धनंजय विरचित दशरूपकम्– प्रथम प्रकाश। |
| **Unit IV** | काव्यमीमांसा– राजशेखरकृत प्रथमअधिकरण के प्रथम अध्याय से पंचम अध्याय तक। |
| **Unit V** | काव्यमीमांसा– राजशेखरकृत प्रथमअधिकरण के षष्ठ अध्याय से दशम अध्याय तक। |

**Suggested Reading:**


1. नाट्यशास्त्र–डॉ0 सत्यार्थ प्रकाश शर्मा।
2. नाट्यशास्त्र–बाबूलाल शुक्ल, चौखम्बा संस्कृत संस्थान,वाराणसी।
3. नाट्यशास्त्र–डॉ0 सुधाकर मालवीय।
4. संस्कृत नाट्य सिद्धान्त–डॉ0 रमाकान्त त्रिपाठी।
5. दशरूपकम्–भोलाशंकर व्यास,चौखम्बा विद्याभवन,वाराणसी।
6. दशरूपकम्–श्रीनिवास शास्त्री,साहित्य भण्डार, मेरठ।

7. राजशेखरकृत–काव्यमीमांसा व्याख्याकार–डॉ0 गंगासागर राय।

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| Discipline Specific Electives | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| Master's in - SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| Programme:- Master's in SANSKRIT | | Year: V | Semester: IX Paper- DSE III |
| Course Code: DSE 12 | Course Title:**व्याकरण– महाभाष्य, सिद्धिप्रक्रिया एवं सूत्र व्याख्या** | | |

**Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि**

1. महाभाष्य व्याकरणिक अवधारणा को जान पायेंगे।
2. लघुसिद्धान्तकौमुदी के आधार पर धातु प्रक्रिया के विषय से परिचित होंगे।
3. लघुसिद्धान्तकौमुदी के माध्यम से आत्मनेपद एवं परस्मैपद से सुपरिचित होंगे।

| **Unit** | **Topic** |
|---|---|
| **Unit I** | महाभाष्य– प्रथमाह्निक व्याकरण प्रयोजन तक। |
| **Unit II** | महाभाष्य– महाभाष्य– शब्द स्वरुप से वर्ण प्रयोजनानि समाप्ति पर्यन्त। |
| **Unit III** | लघुसिद्धान्तकौमुदी– भू धातु प्रक्रिया ( लट्, लिङ्, लृट्, लोट् और लङ्)। |
| **Unit IV** | लघुसिद्धान्तकौमुदी– एध् धातु प्रक्रिया ( लट्, लिङ्, लृट्, लोट् और लङ्)। |
| **Unit V** | लघुसिद्धान्तकौमुदी– आत्मनेपद एवं परस्मैपद सूत्र व्याख्या। |

**Suggested Reading:**


1. महाभाष्य–पं0 चारुदेव शास्त्री।
2. महाभाष्य–प्रदीपोद्योतटीका सहित–वेदव्रत।
3. सिद्धान्तकौमुदी–तत्त्वबोधिनी–पं0 गिरधर शर्मा चतुर्वेदी।
4. तिङन्त प्रकरणम्–डॉ0 लज्जा भट्ट।
5. लघुसिद्धान्तकौमुदी–श्रीवरदराजकृत, व्याख्याकार श्रीधरानन्दशास्त्री।

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| General Electives | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| Master's in SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| Programme:- Master's in SANSKRIT | | Year: V | Semester: IX Paper- GE IV |
| Course Code: GE 11 | Course Title: **धर्मशास्त्र–सामाजिक एवं विधिसम्बद्ध** | | |

**Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि**

1–विद्यार्थी भारतीयज्ञान परम्परा के अन्तर्गत धर्मशास्त्र से परिचित होंगे।

2– वेद धर्म का मूल है जिसके अन्तर्गत मानवजीवन के सभी मूलभूत तत्त्वों का समावेश है। उनके अध्ययन से विद्यार्थी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

3– विद्यार्थी सामाजिक एवं विधिसम्बन्धी व्यवस्था से अवगत होकर अपने कर्तव्यपथ पर अग्रसर होंगे।

| **Unit** | **Topic** |
|---|---|
| **Unit I** | धर्मशास्त्र का अर्थ, क्षेत्र एवं उपयोगिता। |
| **Unit II** | मनुस्मृति में सामाजिक व्यवस्था एवं महत्त्व। |
| **Unit III** | मनुस्मृति में विधिसम्बन्धी व्यवस्था एवं महत्त्व। |
| **Unit IV** | याज्ञवल्क्य में सामाजिक व्यवस्था एवं महत्त्व। |
| **Unit V** | पराशरस्मृति में सामाजिक एवं विधिसम्बन्धी व्यवस्था एवं महत्त्व। |

**Suggested Reading:**


1–धर्मशास्त्र का इतिहास–पी0वी0 काणे भाग–1–3।

2–हिन्दू संस्कृति–राधाकुमुद मुखर्जी।

3–प्राचीन भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक भूमिका–रामजी उपाध्याय ।

4–मनुस्मृति–चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।

5–याज्ञवल्क्यस्मृति–मिताक्षरा प्रकाश संस्कृत–हिन्दी व्याख्यासहिता

6–पराशरस्मृति–चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।

7–वैदिकवाङ्गमय के अनुसन्धेय पक्ष–प्रो0 हरीश्वर दीक्षित,विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी।

8–पौराणिक धर्म एवं समाज–एस0एन0 रॉय, इलाहाबाद,1968।

अथवा

**Group- III**

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| Discipline Specific Electives | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| Master's in - SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| Programme:- Master's in SANSKRIT | | Year: V | Semester: IX Paper- DSE II |
| Course Code: DSE 11 | Course Title: **साहित्यशास्त्र एवं नाट्यशास्त्र – भाग–01** | | |

**Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि**

1. नाट्यशास्त्र के उद्भव से सुपरिचित होंगे।
2. साहित्यशास्त्र के सिद्धान्तों से अवगत होंगे।
3. दशरूपक ग्रन्थ के प्रयोजनों से परिचित हो सकेंगे।
4. नाट्य विषय ज्ञान में वृद्धि कर सकेंगे।
5. रूपकों के भेदक–तत्वों से परिचित हो सकेंगें

| Unit | Topic |
|---|---|
| **Unit I** | नाट्यशास्त्र– भरतप्रणीत– प्रथम अध्याय। |
| **Unit II** | नाट्यशास्त्र– भरतप्रणीत– द्वितीय अध्याय। |
| **Unit III** | धनंजय विरचित दशरूपकम्– प्रथम प्रकाश। |
| **Unit IV** | काव्यमीमांसा– राजशेखरकृत प्रथमअधिकरण के प्रथम अध्याय से पंचम अध्याय तक। |
| **Unit V** | काव्यमीमांसा– राजशेखरकृत प्रथमअधिकरण के षष्ठ अध्याय से दशम अध्याय तक। |

**Suggested Reading:**


1. नाट्यशास्त्र–डॉ0 सत्यार्थ प्रकाश शर्मा।
2. नाट्यशास्त्र–बाबूलाल शुक्ल, चौखम्बा संस्कृत संस्थान,वाराणसी।
3. नाट्यशास्त्र–डॉ0 सुधाकर मालवीय।
4. संस्कृत नाट्य सिद्धान्त–डॉ0 रमाकान्त त्रिपाठी।
5. दशरूपकम्–भोलाशंकर व्यास,चौखम्बा विद्याभवन,वाराणसी।
6. दशरूपकम्–श्रीनिवास शास्त्री,साहित्य भण्डार, मेरठ।
7. राजशेखरकृत–काव्यमीमांसा व्याख्याकार–डॉ0 गंगासागर राय।

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| General Electives | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| Master's in - SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| Programme:- Master's in SANSKRIT | | Year: V | Semester: IX Paper- GE III |
| Course Code: GE 11 | Course Title:**धर्मशास्त्र–सामाजिक एवं विधिसम्बद्ध** | | |

**Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि**

1–विद्यार्थी भारतीयज्ञान परम्परा के अन्तर्गत धर्मशास्त्र से परिचित होंगे।

2– वेद धर्म का मूल है जिसके अन्तर्गत मानवजीवन के सभी मूलभूत तत्त्वों का समावेश है। उनके अध्ययन से विद्यार्थी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

3– विद्यार्थी सामाजिक एवं विधिसम्बन्धी व्यवस्था से अवगत होकर अपने कर्तव्यपथ पर अग्रसर होंगे।

| **Unit** | **Topic** |
|---|---|
| **Unit I** | धर्मशास्त्र का अर्थ, क्षेत्र एवं उपयोगिता। |
| **Unit II** | मनुस्मृति में सामाजिक व्यवस्था एवं महत्त्व। |
| **Unit III** | मनुस्मृति में विधिसम्बन्धी व्यवस्था एवं महत्त्व। |
| **Unit IV** | याज्ञवल्क्य स्मृति में सामाजिक व्यवस्था एवं महत्त्व। |
| **Unit V** | पराशरस्मृति में सामाजिक एवं विधिसम्बन्धी व्यवस्था एवं महत्त्व। |

**Suggested Reading:**


1–धर्मशास्त्र का इतिहास–पी0वी0 काणे भाग–1–3।

2– हिन्दू संस्कृति–राधाकुमुद मुखर्जी।

3– प्राचीन भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक भूमिका–रामजी उपाध्याय।

4–मनुस्मृति–चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।

5–याज्ञवल्क्यस्मृति–मिताक्षरा प्रकाश संस्कृत–हिन्दी व्याख्यासहिता।

6–पराशरस्मृति–चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।

7–वैदिकवाङ्गमय के अनुसन्धेय पक्ष–प्रो0 हरीश्वर दीक्षित,विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी।

8–पौराणिक धर्म एवं समाज–एस0एन0 रॉय, इलाहाबाद,1968

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| General Electives | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| Master's in Core Subject- SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| Programme:-SANSKRIT | | Year: V | Semester: IX Paper- GE IV |
| Course Code: GE 12 | Course Title:**नीतिशास्त्र–राजनीतिसम्बद्ध** | | |

**Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि**

1– विद्यार्थी शुक्रनीति, विदुरनीति एवं चाणक्यनीति के अध्ययन से नीतिविद्या के मूल से अवगत होगें।
2– नीतिकारों में शुक्राचार्य, विदुर एवं चाणक्य की नीतिपरक ग्रन्थों से परिचित हो जायेगें।
3– राजनीति में नीतिशास्त्र की महत्त्वपूर्ण भूमिका से अवगत होकर राष्ट्र की सुरक्षा में सचेत रहेगें।
4– नीतिग्रन्थों में जीवन को सुखमय और सफल बनाने में उपयोगी सुझाव दिये गये हैं, जिससे मानव व्यावहारिक बन सके।

| Unit | Topic |
|---|---|
| **Unit I** | नीतिशास्त्र का उपक्रम, शुक्रनीति के रचयिता, रचनाकाल एवं शुक्रनीति के विषय का संक्षिप्त विवरण। |
| **Unit II** | शुक्रनीति के अनुसार नीतिशास्त्र की प्रशंसा, राजा का नीतिशास्त्र में प्रयोजन एवं धर्म की प्रशंसा, राज्योत्पत्ति ,राजा, राजा के कर्तव्य,राज्याङ्ग एवं मन्त्रीपरिषद्। |
| **Unit III** | विदुरनीति रचयिता, रचनाकाल एवं विदुरनीति के विषय का संक्षिप्त विवरण। |
| **Unit IV** | विदुरनीति के अनुसार राजा का नीतिशास्त्र में प्रयोजन एवं धर्म की प्रशंसा, राज्योत्पत्ति, राजा, राजा के कर्तव्य, राज्याङ्ग एवं मन्त्रीपरिषद्। |
| **Unit V** | चाणक्यनीति के रचयिता,रचनाकाल एवं चाणक्यनीति के विषय का संक्षिप्त विवरण एवं प्रासङ्गिकता। |

**Suggested Reading:**


1– नीतिशास्त्र के मूल सिद्धान्त–वेदप्रकाश वर्मा।
2– नीतिविज्ञान के मूल– मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सौजन्य से उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
3– शुक्रनीति–हिन्दी टीका सहित : अरुण कुमार उपाध्याय।
4– विदुरनीति–महाभारत उद्योगपर्व–गीताप्रेस गोरखपुर।

5–कौटिलीय–अर्थशास्त्र–श्री वाचस्पति।
6– कौटिलीय–अर्थशास्त्र–पाण्डेय रामतेज शास्त्री, पण्डित–पुस्तकालय, वाराणसी।

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| IAPC | 6 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| | | | |
|---|---|---|---|
| Master's in - SANSKRIT | | | |
| Programme:- Master's in SANSKRIT | | Year: V | Semester: IX Paper- IAPC |
| Course Code: IAPC 09 | Course Title: **वेदों में विज्ञान** | | |

**Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि**

1. भारतीय ज्ञान परम्परा में वेदों का प्रमुख स्थान है जिसके अन्तर्गत विज्ञान का महनीय योगदान है इसके अध्ययन से विद्यार्थी प्राचीन विज्ञान के स्त्रोत से अवगत होंगे।
2. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विज्ञान के समस्त तत्त्वों का अन्वेषण करने हेतु वेदों के अध्ययन की आवश्यकता है, जिसकी पूर्ति वेदों में विज्ञान से सम्भव है।
3. विद्यार्थी में वैदिक विज्ञान के अध्ययन से विभिन्न क्षेत्रों में शोधकार्य करने में सक्षम होंगे।

| Unit | Topic |
|---|---|
| **Unit I** | शोधप्रविधि का अघ्ययन एवं अनुशीलन। |
| **Unit II** | वैदिक साहित्य का संक्षिप्त परिचय। |
| **Unit III** | वेदों में वर्णित विज्ञान का अन्वेषण कार्य। |
| **Unit IV** | वनस्पति विज्ञान, एवं जीव–जन्तु विज्ञान का अन्वेषण। |
| **Unit V** | कृषि विज्ञान, भूगर्भ विज्ञान, शिल्प विज्ञान का अन्वेषण। |
| **Unit VI** | शोधकार्यों का सर्वेक्षण एवं शोधप्रविधि के अनुसार शोधकार्य, निष्कर्ष। |

**Suggested Reading:**


1. संस्कृतवाङ्मय का बृहत इतिहास–पं0 बलदेव उपाध्याय, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ।
2. संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास–वेद खण्ड–उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी लखनऊ।
3. संस्कृतसाहित्य का इतिहास–पं0 बलदेव उपाध्याय, सारदा मन्दिर, वाराणसी।
4. वैदिक साहित्य का इतिहास–डॉ0 कर्णसिंह, चौखम्बा सूरभारती, वाराणसी।

5. वैदिक यज्ञ संस्था और वेद विज्ञान–प्रो0 ओमप्रकाश पाण्डेय, नाग प्रकाशन, दिल्ली।
6. वेदों में विज्ञान–पद्मश्री डॉ0 कपिल देव द्विवेदी, विश्वभारतीय भदोई, ज्ञानपुर उत्तर प्रदेश।

**अथवा**

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| IAPC | 6 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| | | | |
|---|---|---|---|
| Master's in - SANSKRIT | | | |
| Programme:- Master's in SANSKRIT | | Year: V | Semester: IX Paper- IAPC |
| Course Code: IAPC 09 | Course Title: **वेदों में राजनीति** | | |

**Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि**

1. विद्यार्थी शोधकार्य के माध्यम से भारतीय ज्ञान परम्परा से अवगत होंगे।
2. वेदों में वर्णित राजनीति के अध्ययन से राज्य की व्यवस्था, राज्य की सुरक्षा एवं राजा के कर्त्तव्यों से अवगत हो कर राष्ट्र की उन्नति में सहयोग करेगें।

| Unit | Topic |
|---|---|
| **Unit I** | शोधकार्य की भूमिका, उद्देश्य एवं महत्त्व का अध्ययन। |
| **Unit II** | वेदों का संक्षिप्त परिचय। |
| **Unit III** | वेदों में राजनीतिशास्त्र का उद्भव एवं विकास। |
| **Unit IV** | वेदों में वर्णित राज्य उत्पत्ति विषयक सिद्धान्त, राज्य का स्वरूप, उद्देश्य और कार्य। |
| **Unit V** | राज्य के विभिन्न तत्त्व एवं विभिन्न अंग। |
| **Unit VI** | राजा का निर्वाचन, राजा के विभिन्न कर्त्तव्य, अर्थव्यवस्था, विविध शस्त्रास्त्र एवं निष्कर्ष। |

**Suggested Reading:**


1. संस्कृतवाङ्मय का बृहत इतिहास–पं0 बलदेव उपाध्याय, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ।
2. संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास–वेद खण्ड–उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी लखनऊ।
3. संस्कृत साहित्य का इतिहास–पं0 बलदेव उपाध्याय, शारदा मन्दिर, वाराणसी ।
4. वैदिक साहित्य का इतिहास–डॉ0 कर्णसिंह, चौखम्बा सूरभारती, वाराणसी।
5. वैदिक यज्ञ संस्था और वेद विज्ञान–प्रो0 ओमप्रकाश पाण्डेय, नाग प्रकाशन, दिल्ली।
7, वेदों में राजनीति–पद्मश्री डॉ0 कपिल देव द्विवेदी, विश्वभारतीय ज्ञानपुरभदोई, उत्तर प्रदेश।

अथवा

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| IAPC | 6 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| Master's in - SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| Programme:- Master's in SANSKRIT | | Year: V | Semester: IX Paper- IAPC |
| Course Code: IAPC 09 | Course Title: **वेदों में लोककल्याण** | | |

**Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि**

1. विद्यार्थी ज्ञान की धरोहर वेद से परिचित होंगे।
2. विद्यार्थी वेदों के अध्ययन से वेद में निहित लोककल्याण के तत्त्वों से परिचित होंगे।
3. विद्यार्थी लोककल्याण से अवगत होकर राष्ट्र की उन्नति में सहयोग करेंगे।

| Unit | Topic |
|---|---|
| **Unit I** | शोधकार्य की भूमिका, उद्देश्य एवं महत्त्व का अध्ययन। |
| **Unit II** | वेदों का प्रतिपाद्य एवं महत्त्व। |
| **Unit III** | वेद में लोककल्याण के प्रकार–विश्वकल्याण, राष्ट्रकल्याण एवं जनकल्याण |
| **Unit IV** | प्राचीन भारतीयसंस्कृति, विश्वकल्याण और पुरुषार्थ, विश्वबन्धुत्व, पृथिवी के धारक तत्त्व, पर्यावरण में विश्वकल्याण |
| **Unit V** | वेदों में राष्ट्रीय प्रार्थना, वेदों में राष्ट्रस्वरूप और कर्तव्य, राजा का निर्वाचन और कर्तव्य, पर्यावरण और राष्ट्रकल्याण |
| **Unit VI** | वेदों में जनकल्याण और दार्शनिक चिन्तन, जनकल्याण और पुरुषार्थ, दुर्गुणों का परित्याग, मन की पवित्रता, नारी सम्मान से उन्नति, स्वस्थजीवन, जनकल्याण और यज्ञ, जनकल्याण और पर्यावरण तथा निष्कर्ष। |

**Suggested Reading:**


1. संस्कृतवाङ्मय का बृहत इतिहास–पं0 बलदेव उपाध्याय, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ।
2. संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास–वेद खण्ड–उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी लखनऊ।
3. संस्कृत साहित्य का इतिहास–पं0 बलदेव उपाध्याय, शारदा मन्दिर, वाराणसी ।
4. वैदिक साहित्य का इतिहास–डॉ0 कर्णसिंह, चौखम्बा सूरभारती, वाराणसी।
5. वैदिक यज्ञ संस्था और वेद विज्ञान–प्रो0 ओमप्रकाश पाण्डेय, नाग प्रकाशन, दिल्ली।
6 वैदिकवाङ्मय के अनुसन्धेय पक्ष–प्रो0 हरीश्वर दीक्षित, प्रकाशक विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी।

7. वेदों में लोककल्याण–पद्मश्री डॉ0 कपिल देव द्विवेदी, विश्वभारतीय ज्ञानपुर भदोई, उत्तर प्रदेश।

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| Discipline Specific Course | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| Master's in - SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| Programme:- Master's in SANSKRIT | | Year: V | Semester: X Paper- DSC I |
| Course Code: DSC 10 | Course Title: **काव्यशास्त्र– भाग–02** | | |

**Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि**

1. काव्यशास्त्र के स्वरूप एवं लक्षण से सुपरिचित होंगे।
2. काव्यशास्त्र की अवधारणा का ज्ञान हो सकेगा।
3. काव्यशास्त्र में काव्यसौन्दर्य के आधायक गुण, रीति, अलंकार, ध्वनि आदि तत्त्वों से सुपरिचित होंगे।
4. काव्यशास्त्र की परम्परा से अवगत हो सकेंगे।
5. विद्यार्थी काव्यशास्त्र के उद्भव और विकास से सुपरिचित होकर काव्यशास्त्रीय तत्त्वों को समझने में सक्षम होंगे।

| Unit | Topic |
|---|---|
| **Unit I** | काव्यप्रकाश–आचार्य मम्मट, प्रथम तथा द्वितीय उल्लास। |
| **Unit II** | काव्यप्रकाश–आचार्य मम्मट, तृतीय एवं चतुर्थ उल्लास रस पर्यन्त। |
| **Unit III** | काव्यप्रकाश– आचार्य मम्मट, अष्टम उल्लास। |
| **Unit IV** | काव्यप्रकाश– आचार्य मम्मट, नवम उल्लास– वक्रोक्ति, अनुप्रास, श्लेष, यमक, दशम उल्लास– उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक। |
| **Unit V** | काव्यप्रकाश– आचार्य मम्मट, दशम उल्लास– निदर्शना, अपह्नुति, विभावना, विशेषोक्ति ,व्यतिरेक, दृष्टान्त और तुल्ययोगिता। |

**Suggested Reading:**


1. काव्यप्रकाश–आचार्य विश्वेश्वर, ज्ञानमण्डल वाराणसी।
2. काव्यप्रकाश–वामन झलकीकर, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली।
3. काव्यप्रकाश–श्रीनिवास शास्त्री, साहित्य भण्डार मेरठ।
4. संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास–पी0 वी0 काणे, मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी।
5. भारतीय काव्यशास्त्रीय सिद्धान्त–प्रो0 हरिनारायण दीक्षित एवं प्रो0 किरण टण्डन, ईस्टर्न बुक लिंकर्स दिल्ली।
6. काव्यशास्त्रीय सिद्धान्त–डॉ0 लज्जा भट्ट।

7. आधुनिक संस्कृत काव्यशास्त्र–डॉ0 आनन्द श्रीवास्तव, ईस्टर्न बुक लिंकर्स दिल्ली।

**Group- I**

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| Discipline Specific Electives | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| | | | |
|---|---|---|---|
| Master's in - SANSKRIT | | | |
| Programme:- Master's in SANSKRIT | | Year: V | Semester: X Paper- DSE II |
| Course Code: DSE 14 | Course Title: **साहित्यशास्त्र एवं नाट्यशास्त्र – भाग–02** | | |

**Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि**

1. नाट्यशास्त्र के उद्भव से सुपरिचित होंगे।
2. साहित्यशास्त्र के काव्य–दृश्यकाव्य, श्रव्यकाव्य से अवगत होंगे।
3. दशरूपक ग्रन्थ के प्रयोजनों से परिचित हो सकेंगे।
4. नाट्य विषय ज्ञान में वृद्धि कर सकेंगे।
5. रूपकों के भेदक–तत्वों से परिचित हो सकेंगें
6. कथावस्तु के स्वरूप को समझ सकेंगे।

| Unit | Topic |
|---|---|
| **Unit I** | दशरूपकम्– द्वितीय प्रकाश। |
| **Unit II** | दशरूपकम्– तृतीय प्रकाश। |
| **Unit III** | दशरूपकम्– चतुर्थ प्रकाश। |
| **Unit IV** | साहित्यदर्पण– प्रथम परिच्छेद। |
| **Unit V** | साहित्यदर्पण– द्वितीय परिच्छेद। |

**Suggested Reading:**


1. दशरूपकम्–आचार्य धनंजय सम्पादक भोलाशंकर।
2. संस्कृत वाङ्मय का वृहद् इतिहास–पंचम खण्ड।
3. अभिनव भारती–अभिनवगुप्त रचित टीका।
4. साहित्य दर्पण–विश्वनाथकविराजकृत, लक्ष्मीटीका युक्त. टीकाकार श्रीकृष्णमोहन शास्त्री,वाराणसी।
5. साहित्य दर्पण–शालिग्रामशास्त्री कृत विमला टीका।
6. साहित्य दर्पण–गजानन शास्त्री मुसलगाँवकर।

## Department of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| Discipline Specific Electives | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| Master's in - SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| Programme:- Master's in SANSKRIT | | Year: V | Semester: X Paper-DSE III |
| Course Code: DSE 15 | Course Title: **संस्कृत रूपकः–प्रकरण, चम्पूकाव्य एवं निबन्ध** | | |

**tcomes:अधिगम उपलब्धि**

1. संस्कृत रूपक भेद प्रकरण से परिचित होंगे।
2. गद्य एवं चम्पूकाव्य की उत्पत्ति और विकास से सुपरिचित होंगे।
3. प्रमुख गद्य एवं चम्पू काव्यों के प्रणेताओं, उनकी कथावस्तु तथा काव्यगत वैशिष्टय के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
4. संस्कृत काव्य की सुदीर्घ एवं वैविध्यमयी परम्परा से अवगत होंगे।
5. गद्य एवं चम्पू की विधाओं के विशिष्ट भाषिक प्रयोगों से अवगत होंगे।

| **Unit** | **Topic** |
|---|---|
| **Unit I** | संस्कृत नाटयसाहित्य में प्रकरण का परिचय एवं मृच्छकटिकम्–के प्रथम अंक । |
| **Unit II** | मुद्राराक्षस– प्रथम एवं द्वितीय अंक। |
| **Unit III** | त्रिविक्रम भट्ट कृत नलचम्पू– प्रथमउच्छ्वास |
| **Unit IV** | काव्यशास्त्रीय एवं साहित्यिक संस्कृतनिबन्ध– वेदानां महत्त्वम्, काव्यलक्षणम्, गीता सुगीता कर्तव्या, रम्या रामायणी कथा, उपमा कालिदासस्य। |
| **Unit V** | प्रकीर्ण संस्कृतनिबन्ध–जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी, उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः,कर्मण्येवाधिकारस्ते, विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्, सत्संगतिः, परोपकारः। |

**Suggested Reading:**


1. मृच्छकटिकम्–डॉ0 रमाकान्त द्विवेदी।
2. महाकवि शूद्रक–डॉ0 रमाशंकर तिवारी।
3. नलचम्पू–प्रो0 कैलाशपति त्रिपाठी।
4. चम्पूकाव्य का आलोचनात्मक अध्ययन–प्रो0 छविनाथ–त्रिपाठी।
5. संस्कृतनिबन्धशतकम्–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी।
6. संस्कृतनिबन्धरत्नाकर–डॉ0 शिवप्रसाद भारद्वाज, दिल्ली नई सड़क अशोकप्रकाशन।
7. संस्कृतनिबन्धसुधा–डॉ0 राधेश्याम गंगवार।
8. मुद्राराक्षस–सम्पादक–पण्डित हरप्रसाद शास्त्री, चौखम्बा संस्कृत सीरिज।
9. मुद्राराक्षस–विशाखदत्त, मोती लाल बनारसी दास पब्लिशर्स, दिल्ली।

## Department of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| Discipline Specific Electives | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| Master's in - SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| Programme:- Master's in SANSKRIT | | Year: V | Semester: X Paper- DSE IV |
| Course Code: DSE 16 | Course Title: **अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य एवं साहित्यकार** | | |

**Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि**

1. अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य से सुपरिचित होंगे।
2. आधुनिक संस्कृतसाहित्यकारों से सुपरिचित होंगे।
3. अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य के विविध आयामों से परिचित होंगे।
4. अर्वाचीन पत्र–पत्रिकाओं से सुपरिचित होंगे।
5. उत्तराखण्ड के प्रमुख संस्कृत साहित्य एवं साहित्यकार परिचित होंगे।

| Unit | Topic |
|---|---|
| **Unit I** | अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य का इतिहास– उन्नीसवीं शताब्दी से लेकर अद्यतन। |
| **Unit II** | अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य के विविध विधायें। |
| **Unit III** | अर्वाचीन प्रमुख संस्कृत साहित्यकार एवं रचनाएँ– पं0 अम्बिकादत्त व्यास, आचार्य विश्वेश्वर पाण्डेय, पण्डिता क्षमाराव, प्रो0 सत्यव्रत शास्त्री, डॉ0 ब्रह्मानन्द शुक्ल, श्रीधर भास्कर वर्णेकर, मथुरा प्रसाद दीक्षित, प्रो0 रमाकान्त शुक्ल, आचार्य कपिलदेव द्विवेदी, प्रो0 रेवाप्रसाद द्विवेदी, प्रो0 हरिनारायण दीक्षित, प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र, प्रो0 हरिदत्त शर्मा। |
| **Unit IV** | अर्वाचीन प्रमुख पत्र–पत्रिकाओं का परिचय– दूर्वा, सागरिका, अजस्रा, अर्वाचीनसंस्कृतम्, संस्कृतमञ्जरी, शोधभारती, शोधप्रभा, वैदिक वाग्ज्योति, गाण्डीवम्, वाक्। |
| **Unit V** | उत्तराखण्ड के प्रमुख संस्कृत साहित्यकार एवं उनका साहित्य–बालकृष्ण भट्ट,पार्थ सारथि डबराल,श्रीकृष्ण जोशी, गोविन्द चन्द्र पाण्डे, मथुरा दत्त पाण्डे, जयदत्त |

| | |
|---|---|
| | उप्रेती, पद्म शास्त्री, शिवप्रसाद भारद्वाज, श्रीकृष्ण सेमवाल। |

**Suggested Reading:**


1. आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास–पद्मभूषण पं0 बलदेव उपाध्याय, मोती लाल बनारसी दास पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
2. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास–सप्तम खण्ड–सम्पादक डॉ0 जगन्नाथ पाठक, उ0प्र0सं0सं0लखनऊ।
3. उत्तराखण्ड के संस्कृत रचनाकार प्रारम्भ से अद्यतन– प्रो0 शालिमा तबस्सुम,परिमल पब्लिकेशन, दिल्ली।
4. आधुनिक संस्कृत नाटक–रामजी उपाध्याय, मोती लाल बनारसी दास पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
5. संस्कृत का अर्वाचीन समीक्षात्मक काव्यशास्त्र– प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र, मोती लाल बनारसी दास पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
6. काव्यालंकारकारिका–प्रोफेसर रेवाप्रसाद द्विवेदी, मोती लाल बनारसी दास पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
7. साहित्यविमर्श–प्रोफेसर रहस विहारी द्विवेदी, मोती लाल बनारसी दास पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
8. संस्कृतसाहित्य का अभिनव इतिहास–प्रो0 राधबल्लभ त्रिपाठी, मोती लाल बनारसी दास पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
9. विंशतिशताब्दीसंस्कृतकाव्यामृतम्–प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र, मोती लाल बनारसी दास पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
10. उत्तराखण्ड के संस्कृत साहित्यकार–अतीत से वर्तमान –प्रो0 शालिमा तबस्सुम, परिमल पब्लिकेशन, दिल्ली।
11. अभिराजयशोभूषण्म्–प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र, मोती लाल बनारसी दास पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
12. आधुनिक संस्कृत साहित्य संचयन, डॉ0 गिरीश चन्द्र पन्त, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली।

अथवा

**Group- II**

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| Discipline Specific Electives | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| | | | |
|---|---|---|---|
| Master's in - SANSKRIT | | | |
| Programme:- Master's in SANSKRIT | | Year: V | Semester: X Paper- DSE II |
| Course Code: DSE 14 | Course Title: **साहित्यशास्त्र एवं नाट्यशास्त्र – भाग–02** | | |

**Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि**

1. नाट्यशास्त्र के उद्भव से सुपरिचित होंगे।
2. साहित्यशास्त्र के काव्य–दृश्यकाव्य, श्रव्यकाव्य से अवगत होंगे।
3. दशरूपक ग्रन्थ के प्रयोजनों से परिचित हो सकेंगे।
4. नाट्य विषय ज्ञान में वृद्धि कर सकेंगे।
5. रूपकों के भेदक–तत्वों से परिचित हो सकेंगें

| Unit | Topic |
|---|---|
| **Unit I** | दशरूपकम्– द्वितीय प्रकाश। |
| **Unit II** | दशरूपकम्– तृतीय प्रकाश। |
| **Unit III** | दशरूपकम्– चतुर्थ प्रकाश। |

| | |
|---|---|
| **Unit IV** | साहित्यदर्पण– प्रथम परिच्छेद। |
| **Unit V** | साहित्यदर्पण– द्वितीय परिच्छेद। |

**Suggested Reading:**


1. राजशेखरकृत–काव्यमीमांसा.व्याख्याकार– डॉ0 गंगासागर राय।
2. दशरूपकम्–आचार्य धनंजय सम्पादक भोलाशंकर, मोती लाल बनारसी दास पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
3. संस्कृत वाङ्मय का वृहद् इतिहास–पंचम खण्ड, मोती लाल बनारसी दास पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
4. अभिनव भारती–अभिनवगुप्त रचित टीका।
5. साहित्य दर्पण–विश्वनाथकविराजकृत. लक्ष्मीटीका युक्त, टीकाकार श्रीकृष्णमोहन शास्त्री, वाराणसी।
6. साहित्य दर्पण–शालिग्रामशास्त्री कृत विमला टीका।
7. साहित्य दर्पण–गजानन शास्त्री मुसलगाँवकर।

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| Discipline Specific Electives | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| | | | |
|---|---|---|---|
| Master's in - SANSKRIT | | | |
| Programme:- Master's in SANSKRIT | | Year: V | Semester: X Paper- DSE III |
| Course Code: DSE 15 | Course Title: **संस्कृत –प्रकरण, चम्पूकाव्य एवं निबन्ध** | | |

**Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि**

1. संस्कृत रूपक भेद प्रकरण से परिचित होंगें
2. गद्य एवं चम्पूकाव्य की उत्पत्ति और विकास से सुपरिचित होंगे।
3. प्रमुख गद्य एवं चम्पू काव्यों के प्रणेताओं, उनकी कथावस्तु तथा काव्यगत वैशिष्टय के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
4. संस्कृत काव्य की सुदीर्घ एवं वैविध्यमयीपरम्परा से अवगत होंगे।
5. गद्य एवं चम्पू की विधाओं के विशिष्ट भाषिक प्रयोगों से अवगत होंगे।

| Unit | Topic |
|---|---|
| **Unit I** | संस्कृत नाटय साहित्य में प्रकरण का परिचय एवं मृच्छकटिकम्–प्रथम अंक । |
| **Unit II** | मुद्राराक्षस– प्रथम एवं द्वितीय अंक। |
| **Unit III** | त्रिविक्रम भट्ट कृत नलचम्पू– प्रथमउच्छ्वास |
| **Unit IV** | काव्यशास्त्रीय एवं साहित्यिक संस्कृतनिबन्ध– वेदानां महत्त्वम्, काव्यलक्षणम्, गीता सुगीता कर्तव्या, रम्या रामायणी कथा, उपमा कालिदासस्य। |
| **Unit V** | प्रकीर्ण संस्कृतनिबन्ध–जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी, उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः,कर्मण्येवाधिकारस्ते, विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्, सत्संगतिः, परोपकारः। |

**Suggested Reading:**


1. मृच्छकटिकम्–डॉ0 रमाकान्त द्विवेदी।
2. महाकवि शूद्रक–डॉ0 रमाशंकर तिवारी।
3. नलचम्पू–प्रो0 कैलाशपति त्रिपाठी।
4. चम्पूकाव्य का आलोचनात्मक अध्ययन–प्रो0 छविनाथ–त्रिपाठी।
5. संस्कृतनिबन्धशतकम्–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, विश्वभारती अनुसन्धान परिषद्, ज्ञानपुर।

6, संस्कृतनिबन्धरत्नाकर–डॉ0 शिवप्रसाद भारद्वाज, दिल्ली नई सड़क अशोकप्रकाशन।

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| General Electives | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| Master's in - SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| Programme:- Master's in SANSKRIT | | Year: V | Semester: X Paper- GE IV |
| Course Code: GE 13 | Course Title:**कौटिलीय–अर्थशास्त्रम् (विनयाधिकरणम्)** | | |

**Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि**

1. विद्यार्थी कौटिल्य अर्थशास्त्र का उल्लेख कर सकेंगे।
2. कौटिल्य अर्थशास्त्र में वर्णित नीतियों की व्याख्या कर सकेंगे।
3. कौटिल्य अर्थशास्त्र के सर्वदेशिक हितोपदेश से परिचित हो सकेंगे।
4. अर्थशास्त्र की नीति को जान सकेंगे।

| Unit | Topic |
|---|---|
| **Unit I** | कौटिल्य अर्थशास्त्र का सामान्य परिचय। |
| **Unit II** | कौटिल्य अर्थशास्त्र प्रथम अधिकरण के प्रथम अध्याय से पंचम अध्याय तक। |
| **Unit III** | कौटिल्य अथेशास्त्र प्रथम अधिकरण के षष्ठ अध्याय से दशम अध्याय। |
| **Unit IV** | कौटिल्य अर्थशास्त्र प्रथम अधिकरण के प्रारम्भिक दश अध्यायों में प्रयुक्त नीतियों का अध्ययन। |

**Suggested Reading:**


1. कौटिलीय–अर्थशास्त्र–श्री वाचस्पति।
2. कौटिलीय–अर्थशास्त्र– पाण्डेय रामतेज शास्त्री, पण्डित–पुस्तकालय, वाराणसी।
3. कौटिलीयम् अर्थशास्त्रम् (प्रथममधिकरणम्)–डॉ0 मिथिलेश पाण्डेय, युवराज पब्लिकेशन, आगरा।
4. कौटिल्य अर्थशास्त्र : एक परिशीलन–प्रो0 पुष्पेन्द्र कुमार, नाग प्रकाशन, दिल्ली।

अथवा

**Group- III**

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| Discipline Specific Electives | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| | | | |
|---|---|---|---|
| Master's in - SANSKRIT | | | |
| Programme:- Master's in SANSKRIT | | Year: V | Semester: X Paper- DSE II |
| Course Code: DSE 14 | Course Title: **साहित्यशास्त्र एवं नाट्यशास्त्र – भाग–02** | | |

**Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि**

1. नाट्यशास्त्र के उद्भव से सुपरिचित होंगे।
2. साहित्यशास्त्र के काव्य–दृश्यकाव्य, श्रव्यकाव्य से अवगत होंगे।
3. दशरूपक ग्रन्थ के प्रयोजनों से परिचित हो सकेंगे।
4. नाट्य विषय ज्ञान में वृद्धि कर सकेंगे।
5. रूपकों के भेदक–तत्वों से परिचित हो सकेंगें

| Unit | Topic |
|---|---|
| **Unit I** | दशरूपकम्– द्वितीय प्रकाश। |
| **Unit II** | दशरूपकम्– तृतीय प्रकाश। |
| **Unit III** | दशरूपकम्– चतुर्थ प्रकाश। |
| **Unit IV** | साहित्यदर्पण– प्रथम परिच्छेद। |
| **Unit V** | साहित्यदर्पण– द्वितीय परिच्छेद। |

**Suggested Reading:**


1. राजशेखरकृत–काव्यमीमांसा.व्याख्याकार–डॉ0 गंगासागर राय।
2. दशरूपकम्–आचार्य धनंजय सम्पादक भोलाशंकर।
3. संस्कृत वाङ्मय का वृहद् इतिहास–पंचम खण्ड।
4. अभिनव भारती–अभिनवगुप्त रचित टीका।
5. साहित्य दर्पण–विश्वनाथकविराजकृत. लक्ष्मीटीका युक्त. टीकाकार श्रीकृष्णमोहन शास्त्री.वाराणसी।

6. साहित्य दर्पण–शालिग्रामशास्त्री कृत विमला टीका।

## Department of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| General Electives | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| Master's in - SANSKRIT | | | |
|---|---|---|---|
| Programme:- Master's in SANSKRIT | | Year: V | Semester: X Paper- GE III |
| Course Code: GE 13 | Course Title:**कौटिलीय–अर्थशास्त्रम् (विनयाधिकरणम्)** | | |

**Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि**

1. विद्यार्थी कौटिल्य अर्थशास्त्र से परिचित हो सकेंगे।
2. कौटिल्य अर्थशास्त्र में वर्णित नीतियों की व्याख्या कर सकेंगे।
3. कौटिल्य अर्थशास्त्र के सार्वदेशिक हितोपदेश से परिचित हो सकेंगे।
4. अर्थशास्त्र की नीति को जान सकेंगे।

| Unit | Topic |
|---|---|
| **Unit I** | कौटिल्य अर्थशास्त्र का सामान्य परिचय। |
| **Unit II** | कौटिल्य अर्थशास्त्र प्रथम अधिकरण के प्रथम अध्याय से पंचम अध्याय तक। |
| **Unit III** | कौटिल्य अर्थशास्त्र प्रथम अधिकरण के षष्ठ अध्याय से दशम अध्याय। |
| **Unit IV** | कौटिल्य अर्थशास्त्र प्रथम अधिकरण के प्रारम्भिक दश अध्यायों में प्रयुक्त नीतियों का अध्ययन। |

**Suggested Reading:**


1. कौटिलीय–अर्थशास्त्र–श्री वाचस्पति।
2. कौटिलीयं–अर्थशास्त्र–पाण्डेय रामतेज शास्त्री, पण्डित–पुस्तकालय, वाराणसी।
3. कौटिलीयम् अर्थशास्त्रम् (प्रथममधिकरणम्)–डॉ0 मिथिलेश पाण्डेय, युवराज पब्लिकेशन, आगरा।
4. कौटिल्य अर्थशास्त्र : एक परिशीलन–प्रो0 पुष्पेन्द्र कुमार, नाग प्रकाशन, दिल्ली।

## Department of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| General Electives | 4 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| | | | |
|---|---|---|---|
| Master's in - SANSKRIT | | | |
| Programme:- Master's in SANSKRIT | | Year: V | Semester: X Paper- GE IV |
| Course Code: GE 14 | Course Title:**पातञ्जलयोगसूत्र** | | |

**Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि**

1. विद्यार्थी प्राचीन ज्ञान परम्परा के अन्तर्गत योगसूत्र से परिचित होंगे।
2. विद्यार्थी योग के अध्ययन से शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक रूप से सुदृढ़ होंगे।
3. विद्यार्थी स्वस्थ एवं निरोग होकर समाज एवं देश की सेवा में तत्पर रहेंगे।

| **Unit** | **Topic** |
|---|---|
| **Unit I** | महर्षि पतंजलि परिचय एवं योगसूत्र का प्रतिपाद्य विषय। |
| **Unit II** | योगसूत्र– समाधिपाद– चित्तभूमियॉ, चित्तवृत्तियॉ, प्रमाणमीमांसा, वृत्तिनिरोध के उपाय, ईश्वर का स्वरूप, सम्प्रज्ञात समाधि एवं असम्प्रज्ञात समाधि। |
| **Unit III** | योगसूत्र– साधनपाद– क्रियायोग, पंचक्लेश, अष्टांगयोग। |
| **Unit IV** | योगसूत्र– विभूतिपाद– धारणा, ध्यान, समाधि। |
| **Unit V** | योगसूत्र– कैवल्यपाद– पंचविध सिद्धियॉ, जात्यन्तर परिणाम, चतुर्विध कर्म, जीवनमुक्ति, कैवल्य स्वरूप। |

**Suggested Reading:**


1. भारतीय दर्शन का इतिहास–डॉ0 के0एस0दास।
2. योगदर्शनम्–पतञ्जलिकृत योगदर्शनम् व्यासभाष्यसहित हिन्दी अनुवादक हरिहरानन्द आरण्य,सम्पादक रामशंकर भट्टाचार्य दिल्ली,मोतीलाल बनारसी।
3. पतंजलि योगसूत्र–हिन्दी : बी0के0एस0 अय्यंगार।
4. योगदर्शन–कैवल्य शास्त्र साधक की कलम से–कौशल कुमार
5. आसन एवं योग विज्ञान–श्रीदेसराज, भारतीय योग संस्थान दिल्ली।
6. योग से रोगनिवारण–स्वामी शिवानन्द सरस्वती, कलकत्ता
7. पतञ्जलि योग प्रदीप–स्वामी ओमानन्द, गीता प्रेस गोरखपुर।
8. पातंजलयोगदर्शनम्–व्याख्याकार–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
9. पातंजलयोगदर्शन–व्याख्याकार–डॉ0 अजीत कुमार, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली।

## Department of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| IAPC | 6 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| | | | |
|---|---|---|---|
| Master's in Core Subject- SANSKRIT | | | |
| Programme:- Master's in SANSKRIT | | Year: V | Semester: X Paper- IAPC |
| Course Code: IAPC 10 | Course Title: **योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा** | | |

**Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि**

1. विद्यार्थी भारतीय ज्ञान परम्परा के अन्तर्गत योग विद्या से अवगत होंगे।
2. विद्यार्थी योग के अध्ययन से अपने जीवन में प्रतिदिन योग का प्रयोग करेगें, जिससे स्वास्थ्य लाभ होगा।
3. योग विद्या के माध्यम से प्राकृतिक चिकित्सा की जानकारी होगीजिससे सामान्य रोगों का उपचार कर सकेंगे।
4. योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा से विद्यार्थी पर्यावरण से सुपरिचित हो सकेंगे।

| Unit | Topic |
|---|---|
| **Unit I** | योग का अर्थ, परिभाषा, योग का ऐतिहासिक अध्ययन एवं महत्त्व। |
| **Unit II** | विभिन्न शास्त्रों में योग का स्वरूप–वेद, उपनिषद, श्रीमद्भगवद्गीता, योग–वाशिष्ठ, जैनमत, बौद्धमत, वेदान्त एवं आयुर्वेद। |
| **Unit III** | विभिन्न योगियों का परिचय– महर्षि पतञ्जलि, गोरक्षनाथ, महर्षि दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, श्री अरविन्द, महर्षि रमण, स्वामी कुवलयानन्द। |
| **Unit IV** | प्राकृतिक चिकित्सा– अर्थ, परिभाषा एवं अवधारणा, प्राकृतिक चिकित्सा का संक्षिप्त इतिहास, प्राकृतिक चिकित्सा अनुसार स्वास्थ्य एवं व्याधि की अवधारणा। |
| **Unit V** | प्राकृतिक चिकित्सा के मूलसिद्धान्त एवं वायु चिकित्सा, सूर्य चिकित्सा, जल चिकित्सा, मिट्टी चिकित्सा का अध्ययन। |
| **Unit VI** | प्रायोगिक–योग अभ्यास, प्रायोगिक–प्राकृतिक चिकित्सा एवं शोधप्रविधि के अनुसार शोधकार्य। |

**Suggested Reading:**


1. प्राकृतिक उपचार की विधियाँ–डॉ0 राजीव रस्तोगी।
2. प्राकृतिक आयुर्विज्ञान–डॉ0 राकेश जिन्दल।
3. योग एवं यौगिक चिकित्सा–प्रो0 राम हर्ष सिंह।
4. पतञ्जलि योग प्रदीप–स्वामी ओमानन्द, गीता प्रेस गोरखपुर।
5. वेदों में योग विद्या–स्वामी दिव्यानन्द, गीता प्रेस गोरखपुर।
6. जल चिकित्सा–डॉ0 नागेन्द्र नीरज।
7. आहार और स्वास्थ्य–डॉ0 हीरा लाल।
8. आसन एवं योग विज्ञान–श्रीदेसराज, भारतीय योग संस्थान दिल्ली।
9. योग से रोगनिवारण–स्वामी शिवानन्द सरस्वती, कलकत्ता
10. दीर्घायु के रहस्य–डॉ0 विनय मोहन शर्मा, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

अथवा

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| IAPC | 6 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| | | | |
|---|---|---|---|
| Master's in - SANSKRIT | | | |
| Programme:- Master's in SANSKRIT | | Year: V | Semester: X Paper- IAPC |
| Course Code: IAPC 10 | Course Title: **भारतीय वास्तुशास्त्र की प्रासङ्गिकता।** | | |

**Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि**

1. विद्यार्थी भारतीयज्ञानपरम्परा की निधि वास्तुशास्त्र से परिचित होगें।
2. वास्तुशास्त्र प्राचीन भारतीयविज्ञान है जिसे वर्तमान में आर्किटेक्चर कहा जाता है, इसके ज्ञान से समयानुकूल गृहनिर्माण आदि कार्य किये जा सकेगें।
3. विद्यार्थियों को रोजगार के क्षेत्र में अवसर प्राप्त होगें।

| Unit | Topic |
|---|---|
| **Unit I** | भारतीय वास्तुशास्त्र का परिचय, वास्तुशास्त्र का उद्भव,विकास एवं महत्त्व। |
| **Unit II** | वास्तुशास्त्र के प्रमुख आचार्य और ग्रन्थ। |
| **Unit III** | वास्तुशास्त्र में पंच महाभूतों का स्वरूप। |
| **Unit IV** | वास्तुशास्त्र में दिक्साधनविचार, भूमि चयन एवं प्रकार। |
| **Unit V** | वास्तुपुरुष का स्वरूप, गृहनिर्माण का प्रकार एवं महत्त्व। |
| **Unit VI** | शिलान्यास की विधि, वास्तुपूजन की विधि एवं महत्त्व तथा वास्तुशास्त्र की प्रासंगिकता। |

**Suggested Reading:**


1. संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास–प्रथम खण्ड पं0 बलदेव उपाध्याय, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ।
2. गृह वास्तु प्रदीप–व्याख्याकर्त्री–श्रीमती शैलजा पाण्डेय,शरण बंसल,बी0जैन पब्लिशर्स।
3. बृहद्वास्तुमाला प्रयोग–हरिशंकर पाठक,भारतीय विद्यासंस्थान वाराण।
4. भारतीय कला और संस्कृति–गोविन्द चन्द्र पाण्डेय,राका प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. भारतीय वास्तुकला–पं0 जगदीश प्रसाद शर्मा,विद्याभवन,चौडा रास्ता,जयपुर।
6. वास्तु विज्ञानम्–आचार्य उमेश शास्त्री,ब्यास बालबक्ष न्यास,शोधसंस्थन,जयपुर।
7. वास्तुराजसौख्यम्–पीयूषधारा एवं पीताम्बरी व्याख्या,मोतीराम बनारसीदास, पटना।
8. वास्तुविद्या–विश्वकर्मा कृत के महादेव शास्त्री कृत व्याख्या अनन्त शयन ग्रन्थावली त्रिवेन्द्रम्।
9. सम्पूर्ण वास्तुशास्त्र–डॉ0 भोजराज द्विवेदी,चौखम्बा संस्कृत साहित्य संस्थान दिल्ली।
10. गृह वास्तु'ः एक समीक्षण–डॉ0 सुधीर कुमार, निदेशक,हरियाणा संस्कृत अकादमी,पंचकुला,सभ्या प्रकाशन,दिल्ली।
11. वास्तुपूजापद्धतिप्रकाशः–संकलनकर्ता श्रीस्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती, श्री सत्यं साधना कुटीर समिति, ऋषिकेश।
11. भारतीय वास्तुशास्त्र का इतिहास–डॉ0 विद्याधर, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली।

अथवा

## Department Of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE TEACHING HOURS- 60

| Course Title | Credits | Credit Distribution of the Course | | | Eligibility Criteria | Pre-Requisite of the Course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| IAPC | 6 | 3 | 1 | 0 | | Nil |

| | | | |
|---|---|---|---|
| Master's in - SANSKRIT | | | |
| Programme:- Master's in SANSKRIT | | Year: V | Semester: X Paper- IAPC |
| Course Code: IAPC 10 | Course Title: **भारतीय पुराभिलेख एवं लिपियाँ।** | | |

**Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि**

1. प्राचीन भारतीय अभिलेखों का अवबोध होगा।
2. प्राचीन लिपियों का ज्ञान होगा।
3. सांस्कृतिक विरासत की जानकारी प्राप्त हो सकेंगी।
4. प्राचीन ज्ञानपरम्परा का मूल्यांकन करने में सक्षम होगें।

| Unit | Topic |
|---|---|
| **Unit I** | पुरालिपि, भारतवर्ष में लेखन कला की प्राचीनता। |
| **Unit II** | अभिलेख, अशोक के प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ अभिलेख का परिचय। |
| **Unit III** | अशोक के पंचम, षष्ठ, सप्तम, अष्टम अभिलेख का परिचय। |
| **Unit IV** | अशोक के नवम, दशम, एकादश एवं द्वादश अभिलेख का परिचय। |
| **Unit V** | स्तम्भ लेख, अशोक के सात स्तम्भ लेखों का विवरण। |
| **Unit VI** | समुद्र गुप्त का प्रयाग स्तम्भ लेख, खारवेल का हाथीगुफा अभिलेख एवं चन्द्रगुप्त द्वितीय के मथुरा शिलालेखों का परिचय एवं लिपियाँ। |

**Suggested Reading:**


1. प्राचीन भारतीय लिपि एवं अभिलेख–डॉ0 गोपाल यादव।
2. पुराभिलेखों में इतिहास परम्परा एवं संस्कृति–प्रभा प्रकाशन।
3. भारतीय लिपियों की कहानी–गुणाकर मूमे, राजकमल प्रकाशन।
4. भारतीय पुरालिपिशास्त्र–मंगलनाथ सिंह, मोतीलाल बनारसी दास।
5. भारतीय प्राचीन लिपिमाला–रायबहादुर पण्डित गौरी शंकर हीराचन्द्र ओझा।
6 भारतीय स्वर्णयुग के संस्कृत अभिलेख एवं अमरकोश के अभिधान–परमानन्द मिश्रा, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली।